लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

द्वादश संस्करण

नूतन क्षितिज

स्वच्छता- पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य विशेषांक

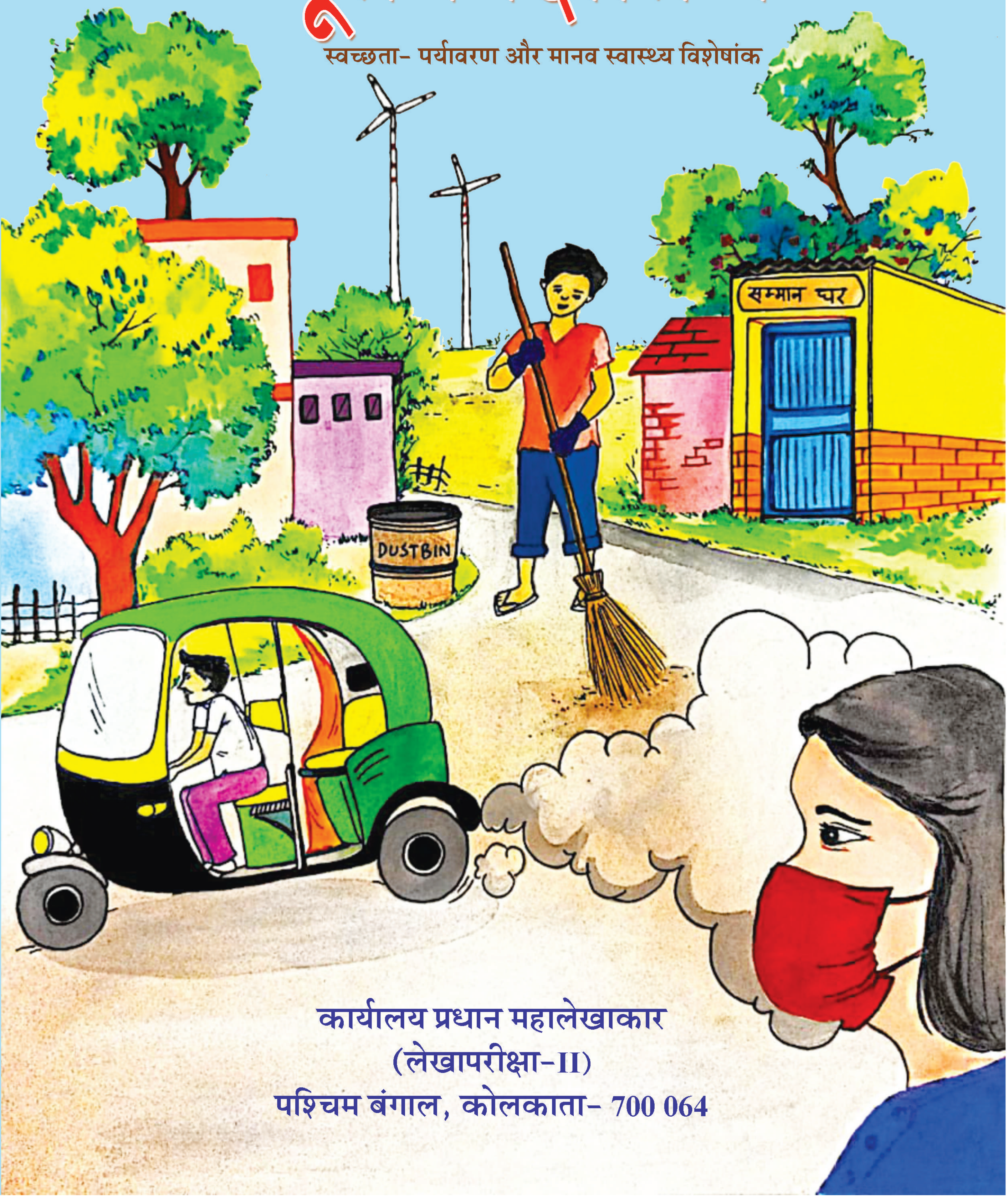

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता- 700 064

मुख पृष्ठ का चित्र अन्नपूर्ना वर्मा द्वारा चित्रित किया गया है।

नूतन क्षितिज

स्वत्वाधिकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता- 700 064

प्रकाशन
नूतन क्षितिज (हिंदी पत्रिका)

मूल्य
राजभाषा के प्रति निष्ठा

वर्ष
2020

मुख पृष्ठ
स्वच्छता - पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य

अंक
द्वादश

कम्प्यूटर कार्य
हिंदी कक्ष

प्रकाशक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता- 700 064

मुद्रक
कल्पना ऑफसेट प्राइवेट लिमिटेड
123 तारक प्रामानिक रोड
कोलकाता-700 006
Mob: 9831052249

प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता का उत्तरदायित्व रचनाकारों का है।

पत्रिका परिवार

संरक्षक

श्रीमती रीना साहा
प्रधान महालेखाकार

सम्पादक

श्री स्वपन कुमार नस्कर
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सहयोगी सम्पादक मंडल

श्री सुनील कुमार
वरिष्ठ अनुवादक

श्रीमती सुधा शर्मा,
कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री अन्नपूर्ना वर्मा
कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री निशा कुमारी
कनिष्ठ अनुवादक

श्री अविनाश कुमार
आंकड़ा प्रविष्टि प्रचालक

अमित शाह
गृह मंत्री
भारत
AMIT SHAH
HOME MINISTER
INDIA

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिन के शुभ अवसर पर, मैं सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देना चाहता हूं।

पूरी दुनिया में हमारा देश, एक अलग प्रकार का देश है । कई प्रकार की संस्कृतियां, कई प्रकार की कलाएं और कई प्रकार की भाषाओं का मेलजोल यहां पर दिखाई पड़ता है। यह हमारी बहुत बड़ी ताकत है । हम सभी दृष्टि से एक संपन्न राष्ट्र हैं । अनेक भाषाएं एवं संस्कृतियां हमारी न केवल विरासत हैं, हमारी ताकत भी हैं, इसलिए हमें इसको आगे बढ़ाना है। सांस्कृतिक व भाषाई विविधता से भरे, इस गौरवशाली देश में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के बीच, सदियों से, कई भाषाओं ने संपर्क बनाए रखने का काम किया है। हिंदी इसमें प्रमुख भाषा रही है और ये योगदान जो हिंदी का है इसको देश के कई नेताओं ने समय-समय पर सराहा है और हिंदी ने भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है। हिंदी भाषा और बाकी सारी भारतीय भाषाओं ने मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता को आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है । हिंदी के साथ बृज, बुंदेलखंडी, अवधी, भोजपुरी, अन्य भाषाएं और बोलियां इसका उदाहरण हैं। हिंदी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम रही है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता, सुबोधता और स्वीकार्यता भी है। हिंदी भाषा की विशेषता है कि इसमें जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वग्राह्यता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों की अविरल धारा, मुख्य रूप से हिंदी भाषा से ही जीवन्त तथा सुरक्षित रह पाई है। हिंदी भाषा ने, बाकी स्थानीय भाषाओं को भी,बल देने का प्रयास किया है । हर राज्य की भाषा को,हिंदी ताकत देती है । हिंदी की प्रतिस्पर्धा कभी भी स्थानीय भाषा से नहीं रही, यह पूरे भारत के जनमानस में ज्यादा स्पष्ट होने की जरूरत है । 26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी। अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं का प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए, जहां आवश्यक है या वांछनीय हो, वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए, हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने के लिए आवश्यक है कि सरकारी कामकाज अनुवाद की अपेक्षा मूल रूप से हिंदी में किया जाए और अन्य स्थानीय भाषाओं में इसका अनुवाद किया जाए । भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों तथा बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से मेरा विनम्र आग्रह है कि स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ वे सरकारी कामकाज में, मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आज भारत एक संसाधन-संपन्न शक्तिशाली देश के रूप में उभर रहा है और इसमें देश की समृद्ध भाषा हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है। वैश्विक मंचों पर प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में दिए गए भाषणों से, हिंदी का वैश्विक कद मजबूत हुआ है और हिंदी प्रेमियों को प्रेरणा भी मिल रही है। इससे देश की युवा पीढ़ी भाषा के साथ जुड़ने की ओर अग्रसर हुई है। बस, आवश्यकता इस बात की है कि आगामी पीढ़ी को अधिक से अधिक सूचनाएं हिंदी में उपलब्ध कराई जाएं और उनमें ऐसे संस्कार विकसित किए जाएं कि वह मूल रूप से हिंदी भाषा में काम करें।

वर्तमान समय में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पोषित नहीं हो सकती। राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है। प्रधानमंत्री जी के 'आत्मनिर्भर भारत' के अभियान को आगे बढ़ाते हुए, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के लिए ई-टूल्स सुदृढ़ करने का काम किया जा रहा है। 'वोकल फॉर लोकल' के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में विभाग द्वारा निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' का विस्तार किया जा रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित की जा सके। इसके अतिरिक्त लीला हिंदी प्रवाह, ई-महाशब्दकोश मोबाइल एप्लीकेशन भी हिंदी प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। राजभाषा विभाग द्वारा ई-सरल हिंदी वाक्यकोश का विकास किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में, हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो पाएंगे। आज हिंदी दिवस के मौके पर मेरा यह कहना है कि सभी मंत्रालय सरकारी कामकाज में इन ई-टूल्स का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करें।

विगत कई माह से पूरी दुनिया अत्यंत विषम परिस्थिति से गुज़र रही है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत कोरोना महामारी से लड़ने में सफल रहा और इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों के साथ प्रत्यक्ष नागरिकों ने भी सहयोग किया है। समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर देश की जनता को कोरोना महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। कोरोना महामारी से उत्पन्न अप्रत्याशित संकट की स्थिति के कारण, जनहित को प्राथमिकता देते हुए इस वर्ष 'हिंदी दिन समारोह' का आयोजन नहीं किया जा रहा है लेकिन जिन मंत्रालयों, विभागों, संस्थाओं, बैंकों, सरकारी उपक्रमों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों ने पूरे वर्ष पूरी निष्ठा से हिंदी में श्रेष्ठ कार्य किया है और प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार जीते हैं, उन्हें मैं अपनी ओर से बहुत-बहुत बधाई देता हूं। इसके साथ-साथ हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए प्रदान किए जाने वाले राजभाषा गौरव पुरस्कार विजेता भी बधाई के पात्र हैं ही। मैं आशा करता हूं कि आप सभी पुरस्कार विजेता यहीं से थकेंगे नहीं, भविष्य में, हिंदी के लिए कार्य करने के लिए, उच्च और अनुकरणीय मानदंड प्रस्थापित करते रहेंगे । ये प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा थी कि देश इस आपदा को अवसर में परिवर्तित करे । राजभाषा विभाग ने भी इस अवसर का सकारात्मक उपयोग करते हुए सूचना तकनीक का सहारा लिया और पहली बार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग जैसे ऑनलाइन माध्यमों के जरिए, बड़ी संख्या में, ई-निरीक्षण एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया। राजभाषा विभाग के प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन शुरू किया गया जिसमें परंपरागत क्लासरूम टीचिंग को परिवर्तित कर, ऑनलाइन वेब कांफ्रेंसिंग टूल के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन करें, तत्परता के साथ अनुपालन करें । हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अधिकारियों/कर्मचारियों से राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ, निर्बाध रूप से उठा पाए ।

आइए ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम प्रतिज्ञा लें कि हिंदी की उन्नति व प्रगति की यात्रा पूरे समर्पण के साथ हम आगे बढ़ाते हुए, हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी को सभी स्थानीय भाषाओं के साथ में रखते हुए, हिंदी के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेंगे। इस मौके पर, मैं देश के युवाओं को भी कहना चाहता हूं कि जब स्थानीय भाषा में बोलने वाला साथी हो तब और कोई भाषा का प्रयोग न करते हुए भारतीय भाषाओं के प्रयोग का आग्रह रखिए । मैं अभिभावकों को भी कहना चाहता हूं,- अपने बच्चों के साथ भारतीय भाषाओं में बात करने की बात का संस्कार डालें और अपनी भाषाओं की यात्रा को हम आगे बढ़ाएं । मोदी सरकार की नई शिक्षा नीति से अन्य भारतीय भाषाओं व हिंदी का समानांतर विकास होगा, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु, विश्वपटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण समृद्ध भाषा के रूप में स्थापित होगी।

'हिंदी दिन' के शुभ अवसर पर आप सभी को पुन: मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

भारत माता की जय !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2020

(अमित शाह)

प्रधान महालेखाकार का संदेश

राजभाषा हिंदी भारत का गर्व है। भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के इतिहास में हिंदी का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। राजभाषा हिंदी को प्रोत्साहित करने में पत्रिकाओं के प्रकाशन का दायित्व प्रमुख है। कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका "नूतन क्षितिज" अपने इस दायित्व का निर्वाहन सफलतापूर्वक कर रही है। कार्यालयी पत्रिकाओं के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रसार में उतरोत्तर वृद्धि हो रही है।

इस वर्ष "नूतन क्षितिज" का द्वादश अंक प्रकाशित हो रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि "नूतन क्षितिज" का यह अंक भी विगत अंकों की तरह कार्यालय में राजभाषा हिंदी के चतुर्दिक प्रसार और उसके सफल कार्यान्वयन के लिए प्रेरित करेगा। इस अंक की विषय-वस्तु "स्वच्छता-पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य" है। आज के इस दौर में यह विषय बहुत अहम एवं प्रासंगिक है।

आज पूरे विश्व एवं मानव जाति के समक्ष वैश्विक महामारी कोरोना एक दानव के रुप में मुँह बाये खड़ी है। आज हमें स्वच्छता के नए मापदंड एवं मानकों का विश्लेषण करना पड़ रहा है। हमें इस प्रश्न का भी सामना करना पड़ रहा है कि कहीं हमारी पर्यावरण एवं प्रकृति की अवहेलना इस महामारी का कारण तो नहीं? यह समय है कि मानवजाति आत्मविश्लेषण करे एवं ऐसे विकास मार्ग का चयन करे जो पर्यावरण एवं स्वच्छता को कायम रखे। यह हमारा गुरुदायित्व है हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए कि हम उनके लिए एक सुन्दर, स्वच्छ पृथ्वी को छोड़ जाएँ। अत: हमें स्वच्छता पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है तभी मनुष्य स्वस्थ रह सकता है और स्वस्थ व्यक्ति ही स्वस्थ समाज की नींव है। आइए हम सब अपने निजी एवं सामाजिक जीवन में स्वच्छता और पर्यावरण को उचित महत्व दें।

मैं "नूतन क्षितिज" के इस अंक के प्रकाशन में समर्पित सहयोग के लिए पत्रिका के संपादक मंडल तथा कर्मठ रचनाकारों को धन्यवाद देती हूँ।

रीना साहा
प्रधान महालेखाकार

संपादक की लेखनी से

कार्यालयी वार्षिक हिंदी पत्रिका "नूतन क्षितिज" का द्वादश अंक अपने पाठकों को सौंपते हुये अपार हर्ष एवं गौरव की अनुभूति हो रही है । कार्यालय में "नूतन क्षितिज" का सफलतापूर्ण प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रसार में श्री वृद्धि करती रही है। कोरोना वायरस के कारण कार्यों में आए व्यव-धान के बावजूद पत्रिका का ससमय प्रकाशन यह सिद्ध करता है कि समय चाहे जैसा भी हो लेकिन कार्मिकगण अपनी रचनाएँ देकर रचनात्मकता और सकारात्मकता का विस्तार करते हुए राजभाषा हिंदी को प्रोत्साहित करते रहेंगे। यह पत्रिका कार्यालय के कर्मियों के राजभाषा हिंदी के प्रति अपार श्रद्धा एवं प्रेम का प्रतिफल है। मैं इन सभी कर्मठ रचनाकारों एवं संपादन कार्य में संलग्न समस्त कर्मियों को सहृदय धन्यवाद देता हूँ जिनके भरपूर सहयोग से इस अंक का सफल प्रकाशन संभव हो पाया।

अत: आगामी वर्षों के लिए भी कार्यालयी वार्षिक हिंदी पत्रिका "नूतन क्षितिज" के उज्जवल भविष्य की मंगलकामना करता हूँ।

स्वपन कुमार नस्कर
सम्पादक

आपके पत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), UTTARAKHAND

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक: हिन्दी/सामान्य-विविध/25-/2018-2019
दिनांक: .03.2020

सेवा में,
व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता - 700064

विषय: कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "नूतन क्षितिज" के एकादश अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "नूतन क्षितिज" के एकादश अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय है। पत्रिका का मुद्रण उत्तम एवं उच्च कोटि का है। पत्रिका के भीतरी पृष्ठों पर बने छायाचित्र आकर्षक एवं मनमोहक हैं जो कि सहसा ही पाठक का ध्यान आकर्षित करते है। रचनाओं का चयन एवं सामग्री का समावेश बड़ी ही कुशलता से किया है।

हिंदी भाषा के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है, इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र है।

शुभकामनाओं सहित।

भवदीय

(संजय राज़दान)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

'महालेखाकार भवन', कौलागढ़, देहरादून - 248195 'Mahalekhakar Bhawan', Kaulagarh, Dehradun - 248195
दूरभाष / Phone : 0135 - 2970870 फैक्स / Fax : 0135 - 2970871, ई-मेल / E-mail : agauuttarakhand@cag.gov.in

---

सत्यमेव जयते

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
चण्डीगढ़-160036
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL(AUDIT) PUNJAB
CHANDIGARH -160036

क्रमांक: हिं.क./हिंदी पत्रिका समीक्षा/2019-20/588.
दिनांक: 1 02.2020.

सेवा में,
वरिष्ठ लेखपरीक्षा अधिकारी/ हिन्दी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(आर्थिक एवं राजस्व लेखापरीक्षा),पश्चिम बंगाल
सी.जी.ओ.कॉम्पलेक्स, तृतीय एम.एस.ओ. बिल्डिंग, डी.एफ.ब्लॉक,
5वां तल, सैक्टर-1,साल्ट लेक, कोलकाता-700064

विषयः **हिन्दी पत्रिका "नूतन क्षितिज" के एकादश अंक का प्रेषण ।**
संदर्भः हिन्दी कक्ष/पत्रिका/113, दिनांक-04.02.2020.

महोदय/महोदया

संदर्भित पत्र के साथ आपकी कार्यालयी पत्रिका **"नूतन क्षितिज"** की प्रति प्राप्त हुई। आपकी पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं एवं इसके प्रेषण के संबंध में आभार स्वीकार करें।

सदैव कि भाँति आपकी पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं उच्च स्तरीय है। पत्रिका का मुद्रण विशेष रूप से सराहनीय है साथ ही छाया चित्रों का संकलन अति उत्तम है। राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु कार्यालयों द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं का विशेष महत्व होता है और इनके द्वारा न केवल ज्ञान और मनोरंजन का प्रचार-प्रसार होता है साथ ही कार्यालयों में होने वाली घटनाओं व कार्यक्रमों से सभी को अवगत कराने में भी सुगमता होती है, इन बिन्दुओं के संबंध में आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित इस पत्रिका का नवीन अंक सार्थक सिद्ध होता है। पत्रिका में संकलित श्री संदीप कुमार झा जी का लेख 'अधूरी आजादी', श्री रिजवान अहमद जी की रचना 'जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान है' और श्री सुनील कुमार जी की कृति 'नैतिकता: राष्ट्रभक्ति का अहम पहलू' विशेष रूप से सराहनीय है। पत्रिका के सम्मानित संपादक मण्डल के सदस्यों व सभी रचनाकारों के अथक परिश्रम को हमारी ओर से हार्दिक धन्यवाद।

साथ ही हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका **"नूतन क्षितिज"** के उज्ज्वल भविष्य के लिए **'सुगंधा'** परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी

सत्यमेव जयते

भारतीय लेखा तथा लेखा-परीक्षा विभाग
महा निदेशक, लेखा-परीक्षा का कार्यालय, केन्द्रीय, कोलकाता

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT, CENTRAL, KOLKATA.

पत्र सं०- राजभाषा/सी/32/273
दिनांक: 03-03-2020

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा),
सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, तृतीय एम.एस.ओ. बिल्डिंग,
डी.एफ. ब्लॉक, 5वां तल, सेक्टर-1,
सॉल्ट लेक, कोलकाता - 700064.

विषय:- हिन्दी पत्रिका 'नूतन क्षितिज' के एकादश अंक की प्राप्ति।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका **'नूतन क्षितिज'** का एकादश अंक पत्र सं. हिन्दी कक्ष/पत्रिका/150 दिनांक- 19.02.2020 प्राप्त हुआ।

पत्रिका में अंतर्निहित सभी रचनाएँ अत्यंत सुपाठ्य, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। ये सभी रचनाएं अत्यंत रूचिकर तथा प्रासंगिक भी हैं।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में से श्री सुजय प्रसाद की कविता **'शहीद पिता के प्रति बेटे की वेदना'**, श्री रिज़वान अहमद की कविता **'हिन्दी है जिसका नाम हमारी है राजभाषा'**, श्री सुनील कुमार का आलेख **'नैतिकता: राष्ट्रभक्ति का अहम पहलू'**, श्री संतोष कुमार ठाकुर की कविता **'नेताजी और पेंशन'**, श्री बिनोद कुमार विश्वकर्मा की कविता **'मनुष्य'**, सुश्री रश्मि सिंह द्वारा रचित **'भारतीय न्याय व्यवस्था में विलंब और उसका कारण'**, श्री संदीप कुमार झा की कविता **'कर्तव्यनिष्ठ सैनिक'**, श्री शुभम कनौजिया का लेख **'महिलाओं की सुरक्षा'**, श्री करुणाकर साहू की कविता **'देशभक्ति'**, श्री धीरेन्द्र कुमार का आलेख **'शिक्षा, कर्तव्य और नैतिकता'**, सुश्री सुधा शर्मा की कविता **'धीर, गम्भीर, देश के वीर'**, सुश्री अन्नपूर्णा वर्मा की कविता **'छोटी-सी पहल'**, श्री मनोरंजन कुमार चौरसिया की कहानी **'यह भी नहीं रहने वाला'**, सुश्री निशा कुमारी की कविता **'देशभक्ति: एक संकल्पना'**, आदि विशिष्ठ रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी/राजभाषा

जि. आई. प्रेस विल्डिंग, 8, किरण शंकर राय रोड (1म मंजिल), कोलकाता-700001
Govt. of India Press Building. 8, Kiran Sankar Roy Road, Kolkata-700001
Phone : 2254-0221, (Gram:ACCOUNTCENT) POST BOX:2699, Fax No.:033 22135377

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) लखनऊ
तृतीय तल, ऑडिट भवन, टी.सी.-35-V/1, विभूति खण्ड
गोमती नगर, लखनऊ-226010 (उ.प्र.)

पत्रांक: म.नि.ले.प.(के.)/प्रशा./राजभाषा हिंदी/ फा.सं. 67/ दिनांक: .03.2020

सेवा मे,
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी / हिंदी कक्ष
प्रधान महालेखाकार (सा.एवं सा.क्षे.लेप.) का कार्यालय
पश्चिम बंगाल

विषय: हिंदी पत्रिका "नूतन क्षितिज" के एकादश अंक का प्रेषण ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "नूतन क्षितिज" के एकादश अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद । स्वतंत्रता सेनानियों एंव राष्ट्र भक्तों के चित्रों को दर्शाता पत्रिका 'नूतन क्षितिज' का आवरण पृष्ठ अनूठा है तथा पत्रिका में संकलित लेख, कवितायें एंव कार्यालय में आयोजित विभिन्न गतिविधियों की झलकियाँ अति आकर्षक, उत्तम एवं प्रशंसनीय है । राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार हेतु आपका प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीया

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी/ प्रशासन

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	नाम	पदनाम	शीर्षक	पृष्ठ
1	तन्मय जाना	व. उपमहालेखाकार	मेघ का काला साया	1
2	आशीष तिर्की	उपमहालेखाकार	देवभूमि	2-3
3	प्रफुल्ल कुमार झा	स. लेखापरीक्षा अधिकारी	स्वच्छता- कर्तव्य और आवश्यकता	4-5
4	कमल कुमार	व. लेखापरीक्षक	कोरोना संकट	5
5	स्नेहा कुमारी	डी.ई.ओ.	आज के हाल	6
6	अन्नपूर्ना वर्मा	कनिष्ठ अनुवादक	छलावा	7
7	निशा कुमारी	कनिष्ठ अनुवादक	स्वच्छता	8
8	करुणाकर साहू	व. लेखापरीक्षा अधिकारी	स्वच्छ हम, स्वच्छ भारत	9
9	सुधा शर्मा	कनिष्ठ अनुवादक	आत्महत्या के विरुद्ध	9
10	संतोष कुमार ठाकुर	स. लेखापरीक्षा अधिकारी	प्रकृति माँ के अंक में लौटो	10-11
11	सुजय प्रसाद	लेखापरीक्षक	श्री सुशांत सिंह राजपूत को समर्पित	12
12	सुबोध कुमार	स. लेखापरीक्षा अधिकारी	ज़िंदगी	13
13	स्मृति कुजूर	व. लेखापरीक्षा अधिकारी	स्वच्छता का संकल्प	13
14	स्नेहा कुमारी	डी.ई.ओ.	स्वच्छता की ओर-गाँधी जी	14
15	वैदेही कुमारी (पुत्री) संदीप कुमार झा	स. लेखापरीक्षा अधिकारी	स्वच्छता (बच्चों के लिए कविता)	15
16	अन्नपूर्ना वर्मा	कनिष्ठ अनुवादक	स्वस्थ शरीर	16
17	बिनोद कुमार विश्वकर्मा	स. लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)	स्वच्छता	16
18	रणजीत कुमार	स. लेखापरीक्षा अधिकारी	भारत और राफेल	17
19	संदीप कुमार झा	स. लेखापरीक्षा अधिकारी	शत-शत बार प्रणाम है।	18
20	शुभम कनौजिया	आशुलिपिक	दिमाग की रीसाइक्लिंग	19
21	रश्मि सिंह	लेखापरीक्षक	स्वच्छता – पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य	20-21
22	संजय कुमार सिंह	स. लेखापरीक्षा अधिकारी	हम कृष्ण से सीख सकते हैं।	22-24
23	संदीप कुमार सरकार	स. लेखापरीक्षा अधिकारी	स्वच्छता, पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य	25
24	अविनाश कुमार	डी.ई.ओ.	क्या जरूरत उनकी	26-27
25	मनोरंजन कुमार	डी.ई.ओ.	संघर्ष और चुनौतियाँ	28
26	स्वपन कुमार धर	व. लेखापरीक्षक	भारत को स्वच्छ बनाना है	29
27	स्वपन कुमार नस्कर	व. लेखापरीक्षा अधिकारी	प्रतिज्ञा	29
28	सुधा शर्मा	कनिष्ठ अनुवादक	अस्वस्थ (एक व्यर्थ)	30-31
29	धीरेन्द्र कुमार	व. लेखापरीक्षक	स्वच्छता एवं मानव स्वास्थ्य	32-35
30	सुनील कुमार	व. अनुवादक	असंगत विकास एवं इसके दुष्परिणाम	36
31	धीरेन्द्र कुमार	व. लेखापरीक्षक	मानव के प्रकृति विजय की चाह-विकास क्रम की एक आवश्यक बुराई	37-38
32	रिंकू घोष	व. लेखापरीक्षक	कश्मीर-समस्या एवं 370 के अलावा वैकल्पिक समाधान	39
33	हिन्दी दिवस समापन समारोह- 2019			40
34	हिन्दी पखवाड़ा 2019 के दौरान आयोजित कार्यक्रम			41-42
35	हिन्दी दिवस समापन समारोह- 2019			43-44

मेघ का काला साया

तन्मय जाना, व.उपमहालेखाकार

शाम होने के पहले ही छाया अंधेरा
अरे, सुनते हो, कहाँ हो तुम
जल्दी करो उजाला, जलाओ दिये।
वो लोग तो अभी भी हैं रस्ते में,
घर लौटे नहीं,
जो अपने ही देश में हैं- प्रवासी।
काले बादलों ने घेर लिया है,
चाँद सितारों का आसमान,
तेज हवाओं से डगमगा गए हैं कदम।
लगता है, बड़ी लंबी होगी ये रात,
लगता है, ये आँधियाँ बुझा देंगी कितने दिये।
इसके बाद केवल जिएंगे,
अँधेरों में आँखें बंद करके,
फिर भी मन में होगी एक आस,
कट जाएगी अंधेरी रात,
छंट जाएगी काली घटा,
फिर होगा उजाला,
फिर होगा दीदार,
हँसते हुए सूरज का।

स्वच्छता को अपने आचरण में इस तरह बसा लो कि वो आपकी एक आदत बन जाये। यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता है। – **महात्मा गाँधी**

देवभूमि

आशीष तिर्की, उपमहालेखाकार

हिमाचल प्रदेश, भारत के उत्तर में स्थित राज्य है जो अपनी खूबसूरती, प्रकृति और शांत वातावरण के कारण प्रसिद्ध है। हिमालय की तलहटी में बसा यह राज्य देवताओं की भूमि के नाम से लोकप्रिय है। यहाँ की हरियाली, बर्फ से ढँकी हुई चोटियाँ, बर्फीले ग्लेशियर, मनमोहक झीलें आने वाले किसी भी पर्यटक का मन मोहने के लिए काफी हैं।

राष्ट्रीय लेखापरीक्षा तथा लेखा अकादमी, शिमला, भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग का शीर्ष प्रशिक्षण संस्थान है। यह लोक सेवा परीक्षा द्वारा नियुक्त भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा सेवा के अधिकारियों को प्रारम्भिक शिक्षा प्रदान करती है। इस एक वर्ष के प्रशिक्षण में मुझे भी हिमाचल के नैसर्गिक सौन्दर्य के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस लेख के जरिये मैं पाठकों को उन स्थानों से संक्षेप में रूबरू कराना चाहता हूँ जहां मुझे और मेरे साथ प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे अधिकारियों को जाने का अवसर मिला।

शिमला– हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला २२०० मीटर की ऊँचाई पर स्थित देश के सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में एक है। शिमला को ब्रिटिश भारत की पूर्ववर्ती ग्रीष्मकालीन राजधानी कहा जाता है। कई पुरानी इमारतें शानदार ब्रिटिश वास्तुकला की याद दिलाती हैं और आज के इस आधुनिक शहर को पुराना फ्लेवर भी देती हैं। यहाँ के प्रसिद्ध स्थानों में रिज मॉल रोड, एडवांस स्ट्डीज (वाइसरीगल लॉज), टॉय ट्रेन, आर्मी संग्रहालय, जाखू मंदिर इत्यादि है। हमारे विभाग की अकादमी भी किसी रिज़ॉर्ट से कम नहीं जिसे हम प्यार से यॉरोज़ कहते हैं। यह ब्रिटिशकाल में ही रेस्टहाऊस हुआ करता था और मोहम्मद अली जिन्नाह जैसी प्रसिद्ध हस्तियाँ इसको अपना घर बना चुकी हैं।

ख़जाना, वन तथा लोकनिर्माण विभाग के प्रशिक्षण के दौरान हमें हिमाचल के कुछ और स्थान पर जाकर रहने का अवसर मिला।

धर्मशाला– धर्मशाला को कांगड़ा घाटी का प्रवेश द्वार कहा जाता है। यहाँ बर्फ से ढकें धौलाधार पर्वत श्रृंखला इस जगह की सुंदरता को और निखार देती है। धर्मशाला को दलाई लामा के पवित्र निवास स्थान के रूप में भी जाना जाता है। वर्ष १९६० से जब दलाई लामा ने अपना अस्थायी मुख्यालय यहाँ बनाया, यहाँ की अंतरराष्ट्रीय ख्याति भारत के छोटे ल्हासा के रूप में बढ़ गयी है। इसके निचले हिस्से को धर्मशाला शहर और ऊपरी हिस्से को मैकलोडगंज के नाम से जाना जाता है। तिब्बती हब होने के कारण बौद्ध धर्म और तिब्बती संस्कृति को सीखने और जानने के लिए यह एक बेहद खास जगह है।

पालमपुर– यह स्थान देवदार के जंगलों और चाय के बगानों से घिरा हुआ है। पालमपुर शहर में कई नदियां बहती हैं और यह शहर पहाड़ों के बीच हरियाली के लिए भी जाना जाता है। यह स्थान अपने चाय बगानों और चाय की गुणवत्ता के लिए दुनियाभर में प्रसिद्ध है। इस शहर में स्थित विक्टोरियन शैली की हवेली और महल बेहद खूबसूरत नजर आते हैं।

बिलिंग घाटी– बीर बिलिंग हिमाचल में स्थित एक छोटा सा शहर है जो रोमांचकारी खेलों जैसे पैराग्लाइडिंग, ट्रेक और मेडिटेशन (ध्यान क्रिया) के लिए जाना जाता है। यह स्थान पैराग्लाइडिंग के लिए दुनिया के सबसे अच्छे स्थानों में से एक है जो हर साल वर्ल्ड पैराग्लाइडिंग चैम्पियनशिप की मेजबानी भी करता है। इसमें टेक ऑफ साइट को बिलिंग कहा जाता है तथा लैंडिंग साइट को बीर कहते हैं। मेरा भी पैराग्लाइडिंग का अनुभव बहुत ही रोमांचकारी तथा अविस्मरणीय रहा। सेवा प्रशिक्षण के दौरान हम हिमाचल के कुछ और स्थानों पर गये जैसे कि पूह- सुम्दो, शिप्की लॉ, नाको झील इत्यादि।

किन्नौर– यह स्थान शिमला से लगभग २३५ किमी की दूरी पर स्थित है। सतलुज, बसपा और स्पीती नदी

के बीच में स्थित यह एक ऐसी जगह है जो अपने हरे-भरे चट्टानी पहाड़ों की सुंदरता के लिए काफी प्रसिद्ध है। यहाँ स्थित है एक खूबसूरत -सा गाँव कल्पा। यहाँ से किन्नर कैलाश चोटी का मनमोहक दृश्य नजर आता है। बताया जाता है कि किन्नर कैलाश शिवलिंग के रूप का है और साथ ही महाभारत युग के पांडवों का भी संबंध इससे बताया जाता है। किन्नौर सेब के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। सेब के बागान यहाँ की सुंदरता में चार-चाँद लगा देती है,

लाहुल-स्पीति- यह एक ठंडा मरुस्थल क्षेत्र है। बर्फ से ढंके पहाड़, रंग-बिरंगे मठ और छोटे-छोटे गाँव एक ऐसी छंटा देती है जो मन मोह ले। तिब्बती संस्कृति की लहर इस जगह को बेहद खास बना देती है। घुमावदार सड़कें और सुरम्य घाटियां यहाँ आने वाले पर्यटकों को बेहद उत्साहित करती हैं। हमारे प्रशिक्षण का एक बेहद ही अभिन्न अंग रहा बुरान घाटी का ट्रेक (यात्रा)। यह बहुत ही रोमांचकारी तथा सुकून देने वाला अनुभव था। एक हफ्ते मानव- सभ्यता से मीलों दूर हम सबने प्रकृति की गोद में बिताये। आजकल के परिदृश्य में यह हमें एहसास दिलाता है कि यंत्र-तंत्र के बिना जीवनशैली कितनी पवित्र और हसीन लगती है। इस यात्रा के दो सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव हैं बुरान दर्रा और चंद्रनाहन झील। घास के मैदान जो घने जंगलों और पहाड़ों से घिरे हों, वहाँ टेंट लगा कर रहना एक बहुत ही सुहाना एहसास था।

पूरा एक वर्ष हिमाचल में बिता कर जब अब शहर में रह रहा हूँ तो यह पता लगता है कि भौतिकवादी जीवन वह प्रसन्नता कभी भी नहीं दे सकती जो कि प्रकृति के बीच रहना दे सकता है। शहर की भीड़-भाड़ से दूर वर्ष में एक बार चैन की सांस ताजी हवा के बीच लेना हमारी सालभर की थकान और चिंता को दूर कर सकती है।

कोई भी व्यक्ति किसी विशेष क्षेत्र में एक विशेषज्ञ हो सकता है पर जब तक आंतरिक सफाई न हो तब तक हमारा मन बेकार धूलभरा होता है।

– श्री सत्य साईं बाबा

स्वच्छता- कर्तव्य और आवश्यकता

प्रफुल्ल कुमार झा, स. लेखापरीक्षा अधिकारी

स्वच्छता एक क्रिया है जिसके माध्यम से हम अपने शरीर, घर, आस-पड़ोस, कार्य-स्थल और अन्य वह जगह जहां मानवीय आवागमन हो, को स्वच्छ, साफ-सुथरा और सुंदर बनाए रखते हैं। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निवास होता है। भारतीय दर्शन में शरीर, बुद्धि, आत्मा, विचार और पर्यावरण को स्वच्छ रखने की बात कही गई है। हम अपने शरीर को बाहर से जितना साफ रखने का प्रयास करते हैं उतना ही हमें अपने विचार, बुद्धि, विवेक, आत्मा और आंतरिक अंगों को शुद्ध व निर्मल बनाए रखना होगा।

मानवीय स्वच्छता में शरीर द्वारा त्यागे गए मल-मूत्र का उचित और समय पर निस्तारण अति आवश्यक है। मल-मूत्र के उचित निस्तारण नहीं होने के कारण अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं और मानव उन रोगों का शिकार बन जाते हैं। यदि मनुष्य अस्वच्छता के कारण फैले बीमारियों का शिकार बन जाए तो उससे तन-मन-धन, समय इत्यादि की बर्बादी होती है। इसलिए सभी मानव का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वह स्वयं, अपने आवास, आस-पड़ोस, कार्य-स्थल को स्वच्छ रखने का निरंतर प्रयास करें। यह मनुष्य का ही कर्तव्य है कि वह जिस पर्यावरण में रहता है उसे स्वच्छ बनाए रखें।

पर्यावरण दो शब्दों परि और आवरण के संयोग से बना है। "परि" का अर्थ है आसपास और "आवरण" का अर्थ है ढँका हुआ। इस प्रकार पर्यावरण से तात्पर्य सभी प्रकृति प्रदत्त तत्व यथा हवा, पानी, मिट्टी, पेड़-पौधे, जीव-जंतु, सूक्ष्मजीव और मानव निर्मित, उपभोगित, त्यागित वस्तुओं से है जिससे मानव चारों ओर से घिरा हुआ है। मानव का स्वास्थ्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम क्या खा रहे हैं, क्या पी रहे हैं, किस प्रकार के हवा में सांस ले रहे हैं और अपने आसपास की साफ-सफाई कैसी है।

कहा जाता है कि विकास करने के लिए पर्यावरण का दोहन आवश्यक हो जाता है। यदि हम सड़क, बहुमंजिला इमारत, रेल-पटरी, कल-कारखाने, शिक्षण-संस्थान आदि बना रहे हैं तो कहीं-ना-कहीं उस जगह पर लगे पेड़-पौधे और बसे जीव-जंतुओं को नाश कर विकास की रेल-पटरी बना रहे हैं। कल-कारखानों और गाड़ियों से निकलने वाली प्रदूषण के कारण हवा जहरीली होती जा रही है। उद्योगों से निकलने वाली दूषित पानी और शहरों से निकले गंदे पानी को नदी में डालने के कारण नदियां प्रदूषित हो गई हैं और नदियों के परिस्थितिकी तंत्र में रहने वाले जीव-जंतु विलुप्त होने लगे हैं। मानव उस दूषित पानी का उपयोग कृषि-कार्य, स्नान एवं अन्य कार्यों में करते हैं। दूषित पानी के प्रयोग से उत्पन्न खाद्य पदार्थ भी प्रदूषित हो जाती है जिसका सीधा असर मानव के स्वास्थ्य पर पड़ता है। खेती में अत्यधिक रासायनिक उर्वरक का प्रयोग, दूषित जल का प्रयोग, फसलों के अवशेषों को खेतों में जलाने से मिट्टी प्रदूषित और बंजर होने लगी है।

हमें विकास के ऐसे स्वरूप को अपनाना है जिससे पर्यावरण को कम-से-कम क्षति हो। वर्तमान समय में मानव जीवन के क्या उद्देश्य हैं, मानवीय मूल्य क्या हैं, मानव होने के नाते पर्यावरण के प्रति हमारे कर्तव्य क्या हैं, इस बात पर विचार किए बिना हम चकाचौंध वाली बनावटी संसार के प्रति आकर्षित हो गए हैं। सभी मनुष्य का यह कर्तव्य है कि वह अपना कुछ समय निकालकर स्वच्छता पर व्यतीत करें। हमें अपने आप को स्वच्छ रखना है, अपने आवास को साफ-सुथरा रखना है, अपने आसपास और कार्यस्थल को स्वच्छ रखना है। स्वच्छता बनाए रखने के लिए हमें बहुत धन की आवश्यकता नहीं है बल्कि प्रयास की आवश्यकता है। ऐसी अवधारणा है कि कोरोना वायरस की उत्पत्ति चीन के वुहान शहर में स्थित एक

बाजार से हुआ। जहां दुनिया के सभी जीव जंतुओं का मांस उपलब्ध कराया जाता था। वहां जीव जंतुओं के अवशेषों से फैली गंदगी के कारण कोरोना वायरस की उत्पत्ति हुई। जिससे आज पूरा विश्व प्रभावित है। करोड़ों लोग इस महामारी की चपेट में आ गए हैं और लाखों जानें चली गई हैं। यदि वहां स्वच्छता होती तो विश्व के करोड़ों लोग प्रभावित नहीं होते। इसलिए मानव जीवन में स्वच्छता का महत्व सबसे ज्यादा है। इस महामारी ने हमें एक बात सिखाई है कि हम अल्प प्रयास और अत्यधिक कम खर्च में भी स्वच्छ जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

मानव के कुछ दैनिक आवश्यकताएं होती हैं और मनुष्य उसे पूरा करने के लिए दिन-रात प्रयासरत रहता है। हमें स्वच्छता को अपने दैनिक आवश्यकता में शामिल करना पड़ेगा और हमें उसके लिए थोड़े समय की आवश्यकता है। स्वच्छता के अनेक लाभ हैं। यदि हम स्वच्छता पर थोड़ा समय व्यतीत करें तो हम स्वयं, अपने परिवार और समाज को गंभीर बीमारियों से बचा कर धन के अपव्यय और समय की बचत कर सकते हैं। हमें ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों का उपयोग करना चाहिए। हमें भौतिक आवश्यकताओं को संतुलित रखते हुए सतत जीवन का प्रयास करना चाहिए। जनसंख्या के बढ़ते दबाव को भी कम करना अति आवश्यक है। हमारे पाठ्यक्रम में स्वच्छता को अनिवार्य रूप से शामिल कर इसके महत्व को बच्चों को बताना चाहिए, जिससे कि वह स्वच्छता को जीवन में अपनाकर सफल राष्ट्र का निर्माण कर सकें।

कोरोना संकट

कमल कुमार, व. लेखापरीक्षक

आई है कोरोना की आंधी,
मार रही यह मानव जाति।
बज गयी है आफत की घंटी,
कर दी सबकी ताला बंदी।
प्रकृति को तो है चैन,
पर मानव जाति है बेचैन।

पशु और पक्षी खुल कर चलते,
इंसान घर में दुबके रहते।

बेजुबान को मार के खाया,
बदले में यह विषाणु फैलाया।

प्रकृति का तुम करो सम्मान,
जीवों का मत करो कत्ले-आम,
वरना होगा यही अंजाम।

मत करो तुम अपनी मनमानी,
प्रकृति की शायद है यही चेतावनी।

आओ मिलकर कर लें प्रण,
कुछ दिन घर में रहें, करें आत्मचिंतन
ताकि प्रखर निखर जाये तन-मन।

हर मनुष्य अपना स्वास्थ्य खुद ही लिखता है।
– गौतम बुद्ध

आज के हाल

स्नेहा कुमारी, डी.ई.ओ.

घड़ी में बजे सुबह के चार हैं
नींद गुल और हाल बेहाल है
वजह सिर्फ यही है शायद
लोगों का मुझसे बेहतर हाल है।

घी शायद ज़्यादा परोसा है उसकी थाली में
कोई घूम रहा देश-परदेश
तो किसी की पे–स्लीप कमाल है
इसी प्रेशर में दोस्तों
नींद गुल और हाल बेहाल है।

बहुत दिनों से कहीं सैर नहीं लगाई
हसीन वादियों में फोटो नहीं खींचवाई
फेसबुक, इंस्टा की दीवारें खाली हैं बहुत दिनों से
हाय मेरी जिन्दगी में क्या किया मैंने कमाल है
बस नींद गुल और हाल बेहाल है।

न जाने मम्मी-पापा कैसे जिया करते हैं
नौ से पाँच की नौकरी में भी खुश रहा करते हैं।
रोज सुबह टहल लेते हैं पास-ही के बगीचे में
जिंदगी तो उनकी भी बेमिसाल है
न नींद गुल, न हाल बेहाल है।

वक्त अलग है, दौर अलग है
हमारे जीने के अंदाज़ अलग हैं
मुस्कुराहट भी अब मौकापरस्त हो गई है
खुश रहना और खुशी दिखाना अलग है
दिखावटी दुनिया में शायद सभी का ये हाल है
नींद गुल और हाल बेहाल है।

थोड़ा फोन से बाहर निकल
थोड़ा ज़िंदगी के मायने बदल
तुलना न कर किसी से अपनी
तू अपने बनाए रास्ते पे चल
जिस दिन तू अपनी मंजिल निकाल लेगा।
न नींद गुल होगी, न हाल बेहाल होगा।

छलावा

अन्नपूर्णा वर्मा, कनिष्ठ अनुवादक

दूर कहीं किसी गाँव में
बैठी हूँ पेड़ की छाँव में,
चारों ओर फैली हरियाली
संग हवा बयारों वाली,
भीनी-भीनी खुशबू-सी छाई
झूम रही हर डाली-डाली।
मस्त-मग्न थी मैं
इस गुंजारित शोर में,
जाने कहाँ से एक भँवरा आया
खींच ले गया किस ओर में,
जाने कितनी दूर मैं भागी
गिरते-पड़ते उसके पीछे-पीछे,
अब न तो वो भँवरा कहीं है
और न तो कोई बाग-बगीचे।
सर को जलाती धूप की तेजी
पथरीली ज़मीं पैरों के नीचे,
खुद को पाती हूँ जैसे
तपती हुई अलाव में,
शायद छाले भी पड़ गए हैं
अब तो मेरे पाँव में,
दूर कहीं किसी गाँव में
बैठी हूँ पेड़ की छाँव में।

भगवान स्वच्छता से प्रेम करता है।
– फ्रांसिस बेकन

स्वच्छता

निशा कुमारी, कनिष्ठ अनुवादक

स्वच्छता की अलख जगानी होगी
न केवल तन की वरन् मन की भी।

ये मन हजारों वर्ष पुराना है
इसका आत्ममंथन करना है।

मन के अंदर की कलुष भावनाएँ
जात- पात, ऊंच-नीच, हेय दृष्टि को मिटाना होगा
द्रष्टा को दृष्टि लाना होगा।

मनुष्य को ये मन एक अनुपम उपहार है
मानवीय भावनाएँ- दया, प्रेम, क्षमा इसका श्रृंगार है।

अपने आंतरिक गुणों का पुन: स्मरण करना होगा
डिजिटल मानस को मानवीय मानस से सामंजस्य करना होगा।

मन की स्वच्छता पवित्रता का प्रतीक है
व्यवहार में इसका समावेश अति आवश्यक है।

हिंसा, घृणा, छल- कपट, प्रतिद्वंदिता मिटाना होगा
अवसाद के गर्त में गिरते देश को बचाना होगा।

मन की स्वच्छता एक सुंदर व सशक्त समाज के निर्माण में सहायक है
हर जगह- सोच, सिनेमा, समाज का पुनरावलोकन करना आवश्यक है।

सहयोग, उदारता, सहिष्णुता, कृतज्ञता लाना होगा
समाज की सोच को स्वच्छ बनाना होगा।

मानसिक दुर्बलता व रुग्णता शोचनीय है
उच्श्रृंखल, उन्मत्त मन अशोभनीय है।

स्वच्छता का संदेश जन-जन तक पहुंचाना होगा
समाज में सकरात्मकता फैलाना होगा।

मन की शुद्धता व प्रसन्नता ही समाज की प्रगति का मूल है
काम ,क्रोध,ईर्ष्या,अहंकार ये मनुष्य के मार्ग में शूल हैं।

स्वच्छता की अलख जगानी होगी
न केवल तन की वरन् मन की भी।

स्वच्छ हम, स्वच्छ भारत

करुणाकर साहू,
व. लेखापरीक्षा अधिकारी

स्वच्छता लाता है स्वस्थ जीवन,
सुंदर निरोग शरीर व मन।
यह है विज्ञान, फिर करना भी आसान,
इससे हमारे साथ होगा हमारा देश भी महान।

अपने घर और पालतू जानवर,
नदी, तालाब, स्कूल, ऑफिस और बाजार।
रास्ता, जमीन, पानी, हवा और पर्यावरण,
स्वच्छता सबको सर्वदा है महत्वपूर्ण।।

अगर कपड़ा, नाखून, लैट्रिन, बाथरुम,
हाथ, मुंह, शरीर का हो स्वच्छीकरण।
टाइफाइड, कोलेरा, मलेरिया, डेंगू,
चिकनगुनिया जैसी बीमारियों का न हो संक्रमण।

ट्रेन, बस या रास्ते पर जब जाते हैं,
इधर-उधर कभी कचरा नहीं फेंकना है।
टॉयलेट करना हो या पान गुटखा खा रहे हों,
स्वच्छता को हमेशा ध्यान में रखना है।।

रघुपति राघव राजा राम,
सबको सन्मति दे भगवान।
स्वच्छ बनाएं हमारा अवाम,
तब देश बनेगा सबसे महान।।

आत्महत्या के विरुद्ध

सुधा शर्मा, कनिष्ठ अनुवादक

राह के हर मोड़ पर एक हारा हुआ इन्सान है,
देख कर मुझसे कहता, होने वाला इसका भी यही हाल है।
डरता दिल, क्या मैं भाग जाऊं खुद से,
लड़ूँ या अपनी कमजोरी पर आँसू बहाऊँ, खुद पे!

बड़े-बड़े वीरों की कहानी पढ़ती हूँ, पर
जीवन पथ पर बढ़ने से न जाने क्यों डरती हूँ!
मुहल्ले के कुछ नाकाम लोगों की सुनी थी कहानी,
कभी उन पर भी छाई थी मेरी तरह जवानी।

ख्वाबों के पुल पर सवार कुछ गीत वे भी गाते थे,
सच्चाई से बेखौफ, अंजाम से अंजान;
उन्होंने न सोचा था, कभी
होगा उनका ऐसा बुरा हाल।

आज मैं भी नाकाम कई बार हुई हूँ,
क्या डर से आगे का रास्ता छोड़ दूँ?
क्या प्रश्नों के इस भँवर में ही खुद को खो दूँ?
क्या अब मैं जीना ही छोड़ दूँ?

मजाक नहीं है सच्चाई को सह पाना,पर
भाग जाना ही कारण है; मजाक बन जाना।
जीवन निरंतर निर्झर उसी का चलता है,
सुख और दुख में मुस्कुराना जिसे आता है।

उम्मीद है यह कविता कुछ समझा पायेगी,
आत्महत्या की राह को छोड़, जीवन की नई दिशा दिखलाएगी।

अच्छे स्वास्थ्य की चमक का आनंद लेने के लिए, आपको व्यायाम करना चाहिए।
– जीन ट्यूनी

प्रकृति माँ के अंक में लौटो

संतोष कुमार ठाकुर, स. लेखापरीक्षा अधिकारी

ब्रह्मा जी ने सृष्टि रची जब
धरा संग मानव भी भेजा
जीवन सुखमय, सरस बनाने
खग, विहंग, तरु, किसलय भेजा
पर्वत भेजे, सागर भेजा
सरिता भेजी, निर्झर भेजा
एकाकी जीवन हरने को
वनचर रुप में सहचर भेजा
समय नियत था हर मौसम का
सबका ही संकेत नियत था
भगीरथी का नीर सलिल था
सिंधु सदा था जीवन-दायी
मोहक था प्रत्यूष सदा ही।
सदा मनोरम अस्ताचल था।
किन्तु,
परमात्मा ने बड़ी भूल की
स्वार्थ मनुज में इतना घोला
स्वार्थ-सिद्धि के पीछे मानव
जनक, जानकी, जग को भूला
लोकैषणा, ईहा महैश्वर्य का
कहाँ आज उसे ले आया
अंध-भक्त बन अनु विकास के
प्रकृति के उपकार को भूला
जल खोया, जल-जीव भी खोया
वन खोया, वनचर भी खोया
बूटी खोया, रोटी खोयी
विकास मध्य मानवता रोई
भौतिकता की अंध-दौड़ में
बीज विनाश मानवता बोई
पर्वत काटा,धरनी चीड़ी
अंधकार हरने को अपना
निश्चल प्रवाह सरिता की रोकी
किन्तु, मूढ़, अंध अब तक न समझा
ज्योति यही प्रभा हर लेगी
बंधन-मुक्त हुई यह जिस दिन
घनघोर निशा दिन में ला देगी।
आखिर,
कहाँ गई आमों की डाली
जिसपर हमने झूले झूले
गई कूक कोयल की न्यारी
जिसके सुर में हम गाते थे
लुप्त हुए भ्रमरों के गुंजन
नहीं कहीं रंगीली खंजन
कहाँ गए सब बाग-बगीचे
कहाँ गए सब चौक-गलीचे
कहाँ लुप्त हुई आम्र मंजरी
मादकता कहाँ उसकी खोई
कहाँ गया वसुधैव कुटुंबकम
एकोडहं में सिमट गए क्यों
तज यूँ जग-कल्याण आज हम
प्रकृति को क्यों भूल गए हम ?
कैसा ये उत्थान मनुज का
कैसा ये विकास चला है
स्व-विकास की अंध दौड़ में
पर-जीवों को सदा छला है
आश्रय-स्थल छीन लिया है

जठरानल में तपा दिया है
कभी संग क्रीड़ा करते थे
हमने उनको मिटा दिया है।
आखिर क्यों,
क्रंदन अब कर रहे हैं गिरि नग
अश्रु-धारा निर्झर से झर-झर
शीतल धरा आज तप्त है
वन-कानन भी अभिशप्त है
लता-विटप, या सर्प-नगीना
सबका आज है मुश्किल जीना
रत्नाकर जल-हीन हो रहा
गिरि का शीर्ष पिघलता जाता
छिद्र हुआ आँचल अंबर के
हुआ विदीर्ण हृदय माता का
रौद्र रश्मि रवि है बरसाता
शशि भी आज अनल बरसाता
विकास-विनाश विच काया फँसती
धरा आज हो व्याकुल पिसती
व्यथा, दाब से छट-पट करती
मुक्ति-हेतु नित अंग पटकती
अन्तर घोर ज्वाला है सिमटी
कभी घोर ज्वाला बरसाती
कभी अंगार, अनल बरसाती
कभी छत्र सैलाब बहाता
कभी भूख बैसाख बढ़ाता
आज,
मृदा दूषित, वायु मलिन है
जल जहरीला, जीव व्यथित है

धरा कुपित, वारिधि आवेशित
उदधि रुष्ट, नगपति क्रोधित है
दावानल संग वन-कानन के
प्रकृति माँ भी आज क्रुद्ध है
समय अभी भी जग जाने का
पीड़ा माँ के हर लेने का
कूप अतल जो हमने खोदे
समय आज उसको भरने का।
अन्यथा,
कही बाढ़, सुखाड़ भी होगा
भूकंपन, भू-स्खलन संग में
तूफान प्रचंड साथ में होगा
इतने में भी नहीं जगे हम
प्रकृति-पाठ पढ़ाने हेतु
महामारी जीवन हर लेगा।
बन्धु।
यह चलचित्र का ट्रेलर
पूरी, पिक्चर बाकी रखी
यदि अभी भी सुप्त रहे हम
मिट जाएगी अपनी हस्ती
फिर, धरती पलटी, नेत्र तीसरी
शिव का तांडव आज निकट है
अत: प्रकृति के संकेत को समझो
सम्मुख चुनौती महाविकट है
बहुत हुआ विकास, अब जागो
अपनी माँ के आँसू पोंछो
छोड़ कुमाता और विमाता
प्रकृति माँ के अंक में लौटो,
प्रकृति माँ के अंक में लौटो।

हमारा शरीर मंदिर के समान है, आत्मा को शुद्ध करने के लिए इसे शुद्ध और स्वच्छ रखें।

– बी.के.एस. अयंगर

श्री सुशांत सिंह राजपूत को समर्पित

सुजय प्रसाद, लेखापरीक्षक

कुंठित हूँ मैं तेरी यह खबर सुनकर
व्यथित हूँ मैं तेरा यह सितम देखकर
शायद तुमको अभी इस दुनिया से जाना न था।
चौके छक्के अभी तो बॉलीवुड में लगे ही थे
शायद हैट्रिक लगाना अभी तो बाकी ही था।

हैरान हूँ मैं तुम्हारी अदाकारी देखकर,
बताओ ना कब आयी जीवन में यह खराबी,
क्यों नही बयां किए तुमने दर्दे-सितम,
क्यों छोड़ गए अपनी यादें, हमारे दिलों में हमदम।

माँ-वाप के सब सपने भूल गये,
बोलो सुशांत तुम क्यों परम निद्रा में सो गये,
आज तुम अनसुलझी कहानी बन गये,
सब लोगों की आँखों के पानी बन गये।

लेकिन अब राष्ट्र जाग चुका है,
हर राज से परदा फाश हो चुका है,
बेनकाब होंगे तुम्हारे ज़ालिम कातिल,
लोगों की बद्दुआ उन्हें जीने नहीं देगी,
शायद चैन से उन्हें मरने भी नहीं देगी।

हमारे दिल से बस यही दुआ निकलती है,
सुशांत तुम जहाँ रहो, अमर रहो,
हमारे नयन दर्पण के प्रत्यक्ष न सही,
पर हमारे हृदय में तुम बसा करो।

ज़िंदगी

सुबोध कुमार,
स.लेखापरीक्षा अधिकारी

ज़िंदगी एक डायरी है,
बनते-बिगड़ते हालात की कहानी है,
हर रोज़ एक नई कहानी होती है,
पन्नों पर बयां डायरी संग जोड़ती है।

गमों के दौड़ में,
लोग राह देखते हैं, खुशी पाने को,
ठीक जैसे ही पतझड़ में,
तड़पते हैं पशु-पक्षी बसंत पाने को।

किसी के लिए सरताज है जिदंगी,
तो किसी की दो वक्त रोटी के लिए मोहताज है जिदंगी,
कभी-कभी कड़कती धूप है ,
तो कभी-कभी महकती रुप है जिन्दगी।

छिपा के रखती है,
हर राज ज़िंदगी,
पन्नों पे बयां,
डायरी संग जुड़ती है ज़िंदगी
पन्नों पे बयां,
डायरी संग जुड़ती है ज़िंदगी।

स्वच्छता का संकल्प

स्मृति कुजूर,
व.लेखापरीक्षा अधिकारी

नयी नहीं ये बात पुरानी,
सुनी सभी ने जानी,
बचपन में जो सीख मिली थी,
जीवन भर है निभानी।

सूरज लाता नया सवेरा,
हम भी करें संकल्प नया,
स्वच्छ रहेंगे, स्वस्थ रहेंगे,
जीवन को दे नई दिशा।

बढ़ती आबादी, बढ़ती गर्मी,
और कितने वृक्ष काटेंगे ?
जीने देंगे हरियाली को,
तभी तो साँस ले पाएँगे।

जल ही जीवन, जल है पावन,
इसे न मैला होने दें,
बहती रहे नदियाँ हमारी,
जल जीवन को न खोने दें।

सुनकर चीख बच्चे की,
कैसे दौड़कर आती माँ,
आज चारों ओर है शोर-शराबा,
क्या सुनी किसी ने उसकी आह!

अपनी कमियों को सुधार करेंगे,
स्वच्छता का संदेश फैलाएंगे,
रखेंगे धरती माँ का ख्याल,
तभी तो मानव जीवन रहे खुशहाल।

स्वच्छता की ओर-गाँधी जी

स्नेहा कुमारी, डी.ई.ओ.

कौन-सा देश कितना विकसित है और कितना सभ्य है, उसके बारे में जानने के लिए उस देश के नागरिकों के बारे में जानना जरुरी होता है, जिसमें एक बात यह भी है कि वह स्वच्छता के प्रति कितना गंभीर है, साफ-सफाई के प्रति कितना सजग एवं स्वच्छता के प्रति कितना जागरुक है। इसी बात को समझते हुए महात्मा गाँधी ने स्वच्छता को लेकर कई अभियान चलाए। वे लगातार जनता को साफ-सफाई के बारे में आवश्यक बातों को बताते रहे। उनका कहना था कि स्वच्छता किसी एक व्यक्ति का कार्य नहीं है बल्कि यह सभी का काम है। साफ-सफाई में बराबर हिस्सेदारी की वकालत करने वाले राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने साफ-सुथरे हिंदुस्तान का ख्वाब संजोया था, जो अभी तक पूरा नहीं हो पाया है। बापू ने ही पहला 'स्वच्छाग्रह" छेड़ा था। उन्होंने 'क्विट इंडिया और क्लीन इंडिया" का संदेश दिया था। दक्षिण अफ्रीका में वकालत करने के बाद स्वदेश लौटते ही बापू ने देश को स्वंतत्र कराने के साथ ही स्वच्छ करने पर भी जोर दिया।

आजादी की अलख जलाने वाले बापू ने सफाई का पहला अभियान 1915 में हरिद्वार के कुंभ मेले से शुरु किया था। इसके बाद 1916 में वह बनारस भी गए और वहाँ लोगों की धार्मिक नगरी काशी में गंदगी और सफाई के प्रति बुरा रवैया देखकर वह हैरान रह गए। बचपन से ही सफाई के सच्चे सेवक रहे महात्मा गांधी देश की आजादी के साथ-ही स्वच्छ भारत का सपना देखते थे। एक ऐसा ही किस्सा है कि एक बार एक अंग्रेज ने महात्मा गांधी से पूछा कि यदि आपको एक दिन के लिए भारत का बड़ा लाट साहब (वायसराय) बना दिया जाए, तो आप क्या करेंगे? गांधीजी ने कहा, 'राजभवन के पास जो गंदी बस्ती है, मैं उसे साफ करुंगा।" अंग्रेज ने फिर यही सवाल पूछा कि मान लीजिए कि आपको एक और दिन उस पद पर रहने दिया जाए तब क्या करेंगे? गांधीजी ने फिर कहा, 'दूसरे दिन भी वहीं करुंगा।" जब तक आप लोग अपने हाथ में झाडू और बाल्टी नहीं लेंगे तब तक आप अपने नगरों को साफ नहीं रख सकते। आप अपने छात्रों को किताबी पढ़ाई के साथ-साथ खाना पकाना और सफाई का काम भी सिखा सकें, तभी आपका विद्यालय आदर्श होगा। तो ऐसे थे हमारे प्यारे बापू जिन्हें स्वच्छता से इतना लगाव था कि वह खुद की भी परवाह नहीं करते थे। लेकिन आज गांधीजी के देश की स्वंतत्रता का स्वप्न तो पूरा हो गया लेकिन स्वच्छता का नहीं। और सोचने वाली बात तो यह है कि आजादी के इतने साल होने के बाद भी हम अपने देश को साफ करने के लिए संघर्ष कर रहें हैं। आखिर गलती कहाँ हुई है ये सोचना हमें ही है।

हमारा शरीर मंदिर के समान है, आत्मा को शुद्ध करने के लिए इसे शुद्ध और स्वच्छ रखें।

– बी.के.एस. अयंगर

स्वच्छता
(बच्चों के लिए कविता)

वैदेही कुमारी (पुत्री)
संदीप कुमार झा, स. लेखापरीक्षा अधिकारी

नित्य सवेरे उठ जाओ तुम लेकर प्रभु का नाम।
माता-पिता, बड़े लोगों को झुककर करो प्रणाम।।
मुँह धोओ वरना दाँतों में कीड़े लग जायेगें।
भीषण बदबू आयेगी और दर्द तड़पायेंगें।
रगड़-रगड़ अपने शरीर को सुबह-शाम नहाओ।
हरी सब्जियाँ, दाल, दूध, फल, मन से डँटकर खाओ।
खिली धूप और खुली हवा में करो खूब व्यायाम।
वक्त पड़े तो कर लो घर का छोटा-मोटा काम।।
अपने घर और आस-पास की भी करो साफ-सफाई।
यह उतना ही आवश्यक है जितनी पढ़ाई-लिखाई।।
खा-पीकर, कूड़ा-करकट न इधर-उधर फैलाओ।
बच्चों! मक्खी-मच्छड़ को न अपने पास बुलाओ।
भिन-भिन करती मक्खी भोजन पर आकर बैठेगी।
दूध-दही, स्वादिष्ट मिठाई पर आकर लेटेगी।।
जगा-जगाकर तुम्हें सुनायेंगें मच्छड़गण लोरी।
पी लेगें सब खून तेरा रातों को चोरी-चोरी।।
दिखते हैं छोटे पर इसके डंक बहुत अपकारी।
घर-घर में फैलाती हैजा, डेंगू-जैसी बीमारी।।
स्वस्थ रहे बिन कैसे जाओगे अपना स्कूल।
जो भी पाठ पढ़ोगे, क्षणभर में जाओगे भूल।
इसीलिए बाहर की चीजें खाना है नादानी।
सोने से पहले लगालो प्यारी मच्छड़दानी।
स्वस्थ व्यक्ति से ही बनता है सुन्दर, स्वस्थ समाज।
कठिन परिश्रम ही सफलता का है असली राज।

स्वास्थ्य एक बड़ा शब्द है। यह केवल शरीर को ही नहीं बल्कि मन और आत्मा दोनों को गले लगाता है।
– जेम्स एच. वेस्ट

स्वस्थ शरीर

अन्नपूर्ना वर्मा, कनिष्ठ अनुवादक

मिट जाएगी हर एक पीर
अगर हो जाए स्वस्थ शरीर।

स्वच्छ है पीना, स्वच्छ है खाना,
फिर न होगा कोई बहाना,
औरों से लंबी रेस लगाना,
झट से दौड़ सीढ़ियों पर चढ़ जाना,
स्वास्थ्य से बड़ा न कोई खजाना,
अमल करो जो इस पर
नहीं पड़ेगा फिर पछताना।
कहलाओगे जग में तुम बलवीर
अगर हो जाए स्वस्थ शरीर।

स्वस्थ शरीर के लिए जरूरी
पास-पड़ोस की साफ-सफाई,
कूड़े-कर्कट जो फेंको सड़कों पर
तो व्यर्थ है सारी पाठ-पढ़ाई,
नदी-नालों को साफ करो
गंदगी को दूर भगाओ
चाहे लड़नी पड़े जी तोड़ लड़ाई।
पीड़ित हो असमय बीमारी से गंभीर
अगर न हो स्वस्थ शरीर।

भाग जाएँगे सारे रोग-व्याध
अगर लोगे ये मन में साध,
कूड़े-कचरे को न सड़कों पर डालो
बिमारी को तुम न पालो,
पर्यावरण को हरा-भरा बनाओ
मिलकर सब एक पेड़ लगाओ।
फिर सुगंधित हवा बहेगी
और बहेगा शीतल नीर
देखो फिर हो जाता स्वस्थ शरीर।

स्वच्छता

बिनोद कुमार विश्वकर्मा,
स. लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)

स्वच्छता ही सुरक्षा है
स्वच्छता से ही मन स्वच्छ हो सकता है।
स्वच्छता बनाकर ही हम,
दूर कर सकते है संक्रमण को
देश को स्वस्थ बनाना है तो
बस स्वच्छता ही अपनाना है
स्वच्छता से ही देश को महान बनाना है
बगैर स्वच्छता के हर कोई बीमार हो जाता है
मनुष्य जीवन मुसीबतों से भर जाता है
खुशियों का नाता भी जीवन से टूट जाता है
जीवन में बस अंधकार ही अंधकार रह जाता है
पर्यावरण को स्वच्छ रखकर ही
हमें देश को स्वच्छ बनाना है
कोरोना की महामारी को देश से भगाना है
देश को स्वस्थ बनाना है।
देश को स्वच्छ बनाना है।

भारत और राफेल

रणजीत कुमार, स. लेखापरीक्षा अधिकारी

विगत कई दिनों से भारतीय मीडिया के द्वारा राफेल लड़ाकू विमान के ऊपर कई तरह के कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। सभी मीडिया चैनलों के कार्यक्रमों को देखने के उपरांत ऐसा लग रहा था कि मानों भारत ने अपने आप को विश्व-शक्ति के रूप में स्थापित कर लिया है। राफेल- फ्रांस की DASSAULT AVIATION कंपनी की लड़ाकू विमान है जो आधुनिक तकनीक से सुसज्जित एवं विभिन्न तरह के युद्ध प्रणाली को संचालित करने में सक्षम है। इस लड़ाकू विमान का उपयोग फ्रांस के साथ-साथ मिस्र और कतर की वायु सेना भी कर रहे हैं।

राफेल की मारक क्षमता की गुण एवं दोष की विवेचना एवं किसी दूसरे लड़ाकू विमान से तुलना किए बगैर भारतीय एवं भारतीय मीडिया को एक महत्वपूर्ण तथ्य याद दिलाना चाहता हूँ कि यह हमारी स्वदेशी तकनीक से विकसित नहीं किया गया है। इस विमान को हम ऐसे देश से आयात कर रहे हैं जो क्षेत्रफल एवं जनसंख्या में हमसे कई गुणा छोटा है। हम सभी भारतीयों के लिए यह गर्व की बात नहीं है।

हम आजादी के 70-75 वर्षों के बाद भी अपनी सीमा की सुरक्षा के लिए तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर नहीं हो पाए हैं। इस विफलता के लिए सिर्फ सरकारों के ऊपर दोष मढ़ना ठीक नहीं होगा, बल्कि इसके लिए हमारे देश की जनता नेताओं से कहीं ज्यादा जिम्मेदार है। यहाँ के नागरिकों ने कभी-भी अपने वोट का प्रयोग देश निर्माण के लिए किया ही नहीं। जब भी वोट हुआ तो लोग जाति, मजहब, क्षेत्रीयता, आरक्षण, राम मंदिर, इत्यादि को आधार बनाया एवं तद्नुसार वोट किया। यहाँ के नागरिक अपने स्वार्थ में अंधे हो गए हैं एवं देशहित की बात भूल गए हैं। शायद उनके जेहन में इस बात का कतई भी भान नहीं कि यह देश सुरक्षित है तभी उनके सभी स्वार्थ एवं लिप्साओं की पूर्ति संभव है। वरना गुलामी के दिनों में नागरिको को किस तरह की यातनाएँ सहनी पड़ी थीं।

भारत आज अपने रक्षा सामग्री की आयात पर करोड़ों रूपये खर्च कर रही है और निकट भविष्य में भी ऐसी ही संभावना दिख रही है। लेकिन यदि भारतीय नागरिक एक बार भी देश निर्माण के लिए सरकार को चुनें तो शायद हमारे समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने का सबसे सफल सार्थक प्रयास होगा और निश्चय ही एक अलग युग की शुरूआत होगी जिसमें न सिर्फ आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का मार्ग प्रशस्त होगा बल्कि करोड़ों रूपये के व्यय की राशि शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि मूलभूत सुविधाओं पर खर्च कर पलायन की ओर अग्रसर प्रतिभा को देश के निर्माण में लगाया जा सकता है और एक आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार किया जा सकता है।

अच्छा स्वास्थ्य आतंरिक शक्ति, शांत मन और आत्मविश्वास लाता है, जो कि बहुत महत्वपूर्ण है।

– दलाई लामा

शत-शत बार प्रणाम है।

संदीप कुमार झा,
स. लेखापरीक्षा अधिकारी

देश-धर्म की खातिर मिट जाना गौरवमय काम है।
मातृभूमि के अमर शहीदों ! शत-शत बार प्रणाम है।
धोखे से खंजर मारा है कायर, निर्मम व्याधों ने।
कब्र खोद देंगे हम उसकी- ठान लिया फौलादों ने।
चीन को काली करतूतों का भुगताना अंजाम है।
मातृभूमि के अमर शहीदों ! शत-शत बार प्रणाम है।
उसके दस-दस सैनिक पर अपना एक सैनिक भारी था।
भारत के जांबाजों का वो रेजिमेंट बिहारी था।
शत्रुदलों में मचा दिया जिसने चहुंदिश कोहराम है।
मातृभूमि के अमर शहीदों ! शत-शत बार प्रणाम है।
आतंकित है शत्रु हमारे बूटों की ठोकर खाकर।
है चूहों में शक्ति कहाँ टिक सके शेर से टकराकर।
रणवीरों ने रण में अरि को पहुंचाया सुरधाम है।
मातृभूमि के अमर शहीदों ! शत-शत बार प्रणाम है।
धूल चटाया था सरसठ में नाथूला की घाटी में।
वार करेंगे वैसा ही दुष्टों की निर्मम छाती में।
धूर्त चीनियों का हमको अब करना काम तमाम है।
मातृभूमि के अमर शहीदों ! शत-शत बार प्रणाम है।
गीदर की सन्तानों ने फिर सिंहों को ललकारा है।
अपनी रक्षा करने को माता ने हमको पुकारा है।
देशभक्ति का भाव न जिसमें, जीवन उसका हराम है।
मातृभूमि के अमर शहीदों ! शत-शत बार प्रणाम है।
हम राणा की संतानें हैं, हममें खून शिवाजी का।
हममें हिम्मत पूज्य गुरू गोविंद सिंह जी प्राजी का।
काँपेगा दुश्मन, भीषण होनेवाला संग्राम है।
मातृभूमि के अमर शहीदों ! शत-शत बार प्रणाण है।
तेरे शौर्य-पराक्रम की गाथा युग-युग तक गाएंगें।
वीर तेरे बलिदानों को हम कभी भूला न पाएँगें।
अपने खून से इतिहासों में लिखा अपना नाम है।
मातृभूमि के अमर शहीदों ! शत-शत बार प्रणाम है।

दिमाग की रीसाइक्लिंग

शुभम कनौजिया, आशुलिपिक

सदी के सबसे ज्यादा ज्ञानी समझे जाने वाले आइंस्टीन ने अपने दिमाग का महज पांच प्रतिशत ही इस्तेमाल किया था। वहीं आज के नवयुवक इसका आधा भी खर्च करने से कतराते हैं, कब कौन सी सरकार दिमाग खर्च करने पर भी टैक्स लगा दे और वो पड़ जाएं झमेले में। गणित के हिसाब से देखा जाए तो पांच प्रतिशत दिमाग का उपयोग करने पर भी पंचानबे प्रतिशत दिमाग बचा रहता है। ये आंकड़ा है एक व्यक्ति का, दुनिया में तो सात अरब से भी अधिक महानुभाव हैं। यानी कुल कितना दिमाग बचा है पता लगाने के लिए वैज्ञानिक कैलकुलेटर की जरुरत पड़ सकती है। हमारे इतना पता लगा पाने तक कुछ नए 'फ्रेश' दिमाग और जुड़ जायेंगे। इसी के साथ कई 'डीएक्टिवेटेड' दिमाग 'एक्टिवेट' हो जायेंगे। कुल मिलाकर बात यह है कि भगवान अपने मानव अंग की फैक्ट्री में दिमाग के प्रोडक्शन के बजाए रीसाइक्लिंग पर विचार करें तो उनके साथ-साथ धरतीवासियों का भी फायदा हो सकता है।

अब दिमाग कोई मामूली चीज थोड़ी है, जैसे कंप्यूटर में 'सी.पी.यू' होता है, दिमाग भी मानव शरीर का 'सी.पी.यू" ही तो है। सबसे ज्यादा दाम इसी का हाई-फाई होता है। एक विशेष योजना बनाई जाए जिसके तहत धरती से बचे-खुचे इंसानी दिमाग भगवान तक पहुँचा दिए जायेंगे। भगवान का फायदा होगा.... और हमारा? इससे भगवान की मानव प्रोडक्शन लागत भी कम हो जायेगी। दिमाग के प्रकार और शेष आकार के हिसाब से उसका मूल्य तय होगा। सबका फायदा होगा। जितना कम दिमाग खर्च करो उतना अधिक लाभ पाओ। मैं जल्द-से-जल्द इस विचार को भारत सरकार तक पहुँचाना चाहता हूँ। इससे पहले कि अमेरिका और चीन इस तकनीक से भी आगे निकल जाएँ, संसद में इसमें बिल पास होना चाहिए क्योंकि इसका सर्वाधिक लाभ यहां के लोगों को होगा।

हाँ एक बात जरुर है, भ्रष्टाचारी दिमाग और तेजी से काम करेंगे। दिमाग की 'ब्लैक-मार्केटिंग' हो सकती है। अपने भविष्य के पुत्र-पुत्रियों हेतु मनपसंद व्यक्ति का दिमाग पाने के लिए कुछ रुपये से लेकर करोड़ खर्च करने पड़ सकते हैं। यही नहीं व्यक्ति के गुजरने से पहले उसके दिमाग की 'एडवांस बुकिंग' की सुविधा जैसे ऑफर बाजार में उपलब्ध होंगे। इस सुविधा का लाभ उठाने के लिए अपना दिमाग खर्च करना होगा सही समय और दिमाग की तलाश में। चलो इस बहाने से ही सही दिमाग का कुछ तो उपयोग हो सकेगा।

आप जरुर यही सोच-सोच कर फूले जा रहे होंगे कि मेरा दिमाग कितना मुनाफा देगा मैंने तो कभी इसका इस्तेमाल भी नहीं किया। अभी तो इसकी 'पैकिंग' भी एकदम 'ओरिजिनल' है। कौन खरीदेगा इसे? विश्वास मानिए हर कोई आइंस्टीन बन सकता है। दिमाग खर्च करने पर कोई रोक थोड़े ही है। दरअसल, दिमाग को नहीं विचारों को रीसाइकिल करने की जरुरत है। सोच बदलेगी तो यह तंत्र और देश भी बदलेगा।

हमारा शरीर मंदिर के समान है, आत्मा को शुद्ध करने के लिए इसे शुद्ध और स्वच्छ रखें।

– बी.के.एस. अयंगर

स्वच्छता – पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य

रश्मि सिंह, लेखापरीक्षक

स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण, मानव स्वास्थ्य के दो मूल स्तंभ है। ये अविवादित सत्य है कि आज के बढ़ते औद्योगीकरण और तकनीकी विकास ने इंसान को अति-आधुनिक सुख-सुविधाएं प्रदान की हैं जिनके कारण उसका जीवन अप्रत्याशित रुप से सरल और सहज बन गया है। लेकिन यह भी उतना ही सत्य है कि बढ़ते औद्योगीकरण और उन्नत औद्योगिकी के कारण पृथ्वी के प्राकृतिक वातावरण में व्यवधान उत्पन्न हो गया है जिसने प्रकृति के स्वाभाविक सामंजस्य को भी असंतुलित कर दिया है। चूँकि मानव-जीवन प्रकृति का अभिन्न अंग है, फलस्वरुप ये बिगड़ा पर्यावरण मानव स्वास्थ्य को बहुत ज्यादा प्रभावित कर रहा है।

पर्यावरण और स्वच्छता – प्रकृति का वह आवरण जो प्राणियों को चारों ओर से घेरे है उसे पर्यावरण कहते हैं जिसे मनुष्य ने अपने क्रिया कलापों से विकृत कर दिया है एवं जिसकी सुरक्षा संपूर्ण विश्व की सुरक्षा बन गयी है।

स्वच्छता का अर्थ अपने घर, समाज एवं देश के साथ-साथ अपने शरीर, हृदय एवं मन को भी साफ रखना है।

पर्यावरण सुरक्षा की समस्या – मानव का प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का सपना प्रकृति असंतुलन का कारण है। मनुष्य अब भी सावधान नहीं हो रहा। फलत: पर्यावरण सुरक्षा की समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं।

निरन्तर जनसंख्या वृद्धि – वृद्धि, औद्योगीकरण एवं शहरीकरण ने तीव्रगति से प्रकृति के हरे-भरे क्षेत्रों को कंकरीट के जंगलों में परिवर्तित कर दिया है। आज श्वास लेने के लिए शुद्ध वायु का अभाव होता जा रहा है, जिससे अनेक प्रकार के रोग जन्म ले रहे हैं। ओजोन परत का क्षरण हो रहा है।

वायु प्रदूषण - फैक्ट्रियों और यातायात के साधनों से उत्पन्न होने वाले धुएँ से न केवल सांस की बिमारियाँ हो रही हैं अपितु यही पृथ्वी को बाहरी वातावरण से बचाने वाले ओजोन लेयर के लिए भी घातक सिद्ध हो रही है।

जल प्रदूषण - संसार के सारे तत्वों में जल ही सर्वाधिक घुलनशील पदार्थ है एवं किसी भी हानिकारक पदार्थ का जल में आसानी से घुलना स्वाभाविक है एवं यदि ये पानी मनुष्य पीता है तो गले के संक्रमण, फेंफड़े की बिमारियाँ, आँत संबधी रोग के साथ पीलिया जैसे रोग होते हैं।

ध्वनि प्रदूषण - वातावरण में चारों ओर मोटरकार, बस, जेट विमान, ट्रैक्टर, लाउडस्पीकर, बाजे, सायरन तथा कल-कारखानों की मशीनों से निकलती तीव्र-ध्वनियाँ, ध्वनि प्रदूषण को जन्म देकर निरंतर पर्यावरण सुरक्षा के लिए समस्या बनती जा रही है।

रसायन प्रदूषण - पैदावार बढ़ाने के लिए किसानों द्वारा इस्तेमाल किए जानेवाले कीटनाशक एवं रसायन फैक्ट्रियों के घटक से जो रसायन वातावरण में फैल रहा है वह चिंता का विषय है।

रेडियोधर्मी प्रदूषण - केन्द्रों और परमाणु परीक्षणों के परिणामस्वरुप जल, वायु तथा पृथ्वी पर रेडियोधर्मी पदार्थ छोटे-छोटे कणों के रुप में वातावरण में फैल जाते हैं। ये रेडियोधर्मी प्रदूषण आगामी अनेक पीढ़ियों के लिए भयंकर समस्याएँ उत्पन्न कर रही हैं।

घरेलू पर्यावरण और प्रदूषण - घर के भीतर का पर्यावरण भी मनुष्य के स्वास्थ्य को काफी गहराई से प्रभावित करता है, जैसे डिटरजेंट-साबुन, पेंट, वार्निश, परफ्यूम, कॉस्मेटिक्स, शैम्पू, सिंथेटिक कपड़े, कॉलीन, कीटनाशी दवाएँ, स्याही, सुगंधित पदार्थ, हमारे शरीर में साँस द्वारा पहुँच कर कम या ज्यादा परोक्ष रुप से प्रभाव डालती हैं। फलस्वरुप सिरदर्द, माइग्रेन, एलर्जी, साँस उखड़ने की समस्या, दमा, जुकाम ,

त्वचा पर दाने और खुजली, एक्जिमा, उल्टी, सिर चकराना इत्यादि समस्याएँ होती है।

पर्यावरण एवं स्वच्छता का महत्व – पर्यावरण और प्राणियों का घनिष्ठ संबंध है। परन्तु मानवीय महत्वाकांक्षाओं, भूलों, प्रतिस्पर्धाओं एवं अस्वच्छता के चलते पर्यावरण प्रदूषण का संकट उत्पन्न हो गया है। प्रदूषण एवं अस्वच्छता के आधिक्य से पृथ्वी के अनेक जीव और वनस्पती लुप्त हो गये हैं और अनेक लुप्त होने के कगार पर हैं। यदि पर्यावरण प्रदूषण एवं अस्वच्छता इसी गति से बढ़ता रहा तो वह दिन दूर नहीं है, जब मनुष्य का अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाएगा। पर्यावरण सुरक्षा की महत्ता आज अन्तरराष्ट्रीय चिंता का विषय बन चुकी है। जून 1972 में स्टॉकहोम में आयोजित संयुक्त राष्ट्र मानव पर्यावरण सम्मेलन में पर्यावरण सुरक्षा को लेकर एक घोषणा-पत्र जारी किया गया। तब से निरंतर जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में 30-35% तक कार्बन उत्सर्जन कम करने का लक्ष्य रखा गया है। भारत ने भी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में वर्ष 2030 तक अपने कार्बन उत्सर्जन में 30-35% तक की कटौती का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसके अन्तर्गत सन 2030 तक होनेवाले कुल बिजली उत्पादन में 40% हिस्सा कार्बनरहित ईंधन से होगा। रोग तथा महामारियों से बचने के लिए स्वच्छता बहुत जरुरी है।

पर्यावरण सुरक्षा के उपाय - इस कार्य हेतु जन जागरण, सहयोग, और समर्थन अनिवार्य है। जैसे-

- पॉलीबैग का प्रयोग बंद करना, पुरानी वस्तुओं को नए ढंग से पुन: प्रयोग में लाना।
- रेन वाटर हार्वेस्टिंग द्वारा वर्षा-जल का संरक्षण करना।
- पानी की बर्बादी को रोकना।
- ऊर्जा संरक्षण करना, बिजली के दुरुपयोग को समाप्त करके उसका कम से कम प्रयोग करना।
- प्रदूषण पर नियंत्रण
- कृत्रिम उर्वरकों के स्थान पर जैविक उर्वरकों का प्रयोग।
- वृक्षारोपण को बढ़ावा एवं वृक्ष-कटाव को रोकना।
- पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाले दूषित धुँए से बचने के लिए पर्यावरण के अनुकूल साधनों की खोज, विकास और प्रयोग।
- पेय जल की सफाई एवं उनके नियमित स्रोतों की स्वच्छता अति आवश्यक है।

स्वच्छता के उपाय - स्वास्थ्य रक्षा के लिए स्वच्छता बहुत अनिवार्य है। इसके लिए हमें –

- कचरे की मात्रा कम करनी होगी।
- कचरे को सही स्थान पर फेंकना जैसे गीले एवं सूखे कचरे को सही स्थान पर फेंकना। सूखे एवं गीले कचरे हेतु हरे एवं नीले डस्टबिन का क्रमश: प्रयोग।
- खुले में शौच न करना ।
- घर और बाहर की समुचित एवं नियमित सफाई करनी होगी।
- सामूहिक शौचालयों का अधिव-से-अधिक निर्माण।
- गाँवों, सड़कों, फूटपाथ एवं बस्तियों को साफ रखना होगा।

हमें ये नही भूलना चाहिए की देश की स्वच्छता मात्र सरकार की नहीं अपितु हर नागरिक का कर्तव्य है।

उपसंहार- स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत

स्वच्छता बनाते हुए पर्यावरण सुरक्षा और उसमे संतुलन बनाये रखना ही स्वस्थ भारत की सुदृढ़ नींव है एवं पृथ्वी की सुंदरता पर्यावरण है। पर्यावरण है तो मानव जीवन संभव है। अत: मानव स्वास्थ्य को बचाये रखने के लिए पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छता दोनों ही आवश्यक है।

हम कृष्ण से सीख सकते हैं।

संजय कुमार सिंह, स. लेखापरीक्षा अधिकारी

भगवान कृष्ण को किस नाम से पुकारें? मैनेजमेंट मास्टर कहें या जगत गुरु, गिरधारी कहें या रणछोड़। भगवान कृष्ण के जितने नाम हैं, उतनी कहानियाँ। जीवन जीने के तरीके को अगर किसी ने परिभाषित किया है तो वह कृष्ण है। कर्म से होकर परमात्मा तक जाने वाले मार्ग को उन्होंने ही बताया है। संसार से वैराग्य को सिरे से नकारा और यह सिद्ध किया कि कर्म का कोई विकल्प नहीं। कृष्ण कहते हैं, मैं हर हाल में आता हूँ जब पाप और अत्याचार का अंधकार होता है तब भी, और जब प्रेम और भक्ति का प्रकाश होता है तब भी। दोनों ही परिस्थितियों में मेरा आना निश्चित है। वैसे तो कृष्ण का संपूर्ण जीवन ही एक प्रबंधन की किताब है जिसे सैकड़ों-हजारों बार कहा-सुना जा चुका है। कुरुक्षेत्र में दो सेनाओं के बीच खड़े होकर भारी तनाव के समय कृष्ण ने अर्जुन को जो ज्ञान दिया, वो दुनिया का श्रेष्ठतम् ज्ञान है। गीता का जन्म युद्ध के मैदान में दो सेनाओं के बीच हुआ। जीवन की श्रेष्ठतम् रचनाएँ भारी तनाव और दबाव में ही होती है, अगर आप दिमाग को शांत और मन को स्थिर रखने की कोशिश करें तो सबसे बुरी परिस्थितियों में भी आप अपने लिए कुछ बहुत बेहतरीन निकाल पाएंगे। यह कृष्ण की सीख है। गीता पढ़ने से पहले अगर इसी बात को समझ लिया जाए तो गीता पढ़ना सार्थक समझिए। कृष्ण का जीवन ऐसी ही घटनाओं से भरा पड़ा है, जरुरत है सही नजरिए को समझने की। उनका जीवन आपके लिए पौराणिक कथाओं का एक हिस्सा मात्र भी हो सकता है और आपका पूरा जीवन बदलकर रख देने वाला ज्ञान भी। आवश्यकता हमारी है, हम उनके जीवन से क्या लेना चाहते हैं। कृष्ण मात्र कथाओं मे पढने या सुने जाने वाले पात्र नहीं हैं, वो चरित्र और व्यवहार में उतारे जाने वाले देवता हैं। हम कृष्ण से सीख सकते हैं कि जीवन को श्रेष्ठ कैसे बनाया जाए। वैसे तो उनमें अनंत गुण हैं किन्तु उनसे जुड़ी कुछ बातें ऐसी हैं कि जिन्हें अगर व्यवहार में उतार लिया जाए तो सफलता निश्चित मिलेगी।

संघर्ष का नाम ही जीवन है - कृष्ण का जन्म कारागार में हुआ । पैदा होते ही उन्हें रातों-रात यमुना पार कर गोकुल ले जाया गया। वहाँ पहुँचने के तीसरे ही दिन पूतना मारने आ गई। यहाँ से शुरु हुआ संघर्ष। देह त्यागने से पहले द्वारिका डुबोने तक रहा। कृष्ण का जीवन कहता है, आप कोई भी हों, संसार में आए हैं तो संघर्ष हमेशा रहेगा । मानव जीवन मे आकर परमात्मा भी सांसारिक चुनौतियों से बच नही सकता। कृष्ण ने कभी किसी बात की शिकायत नहीं की। हर परिस्थिति को जिया और जीता। कृष्ण कहते हैं परिस्थितियों से भागो मत, उसके सामने डटकर खड़े हो जाओ क्योंकि कर्म करना ही मानव जीवन का पहला कर्तव्य है। हम कर्म से ही परेशानियों को जीत सकते हैं।

निरोगी काया – कृष्ण का बचपन माखन – मिश्री खाते हुए गुजरा। आज भी भोग लगाते हैं हम लेकिन ये संकेत कुछ और है। आहार अच्छा हो, शुद्ध हो, बल देने वाला हो। बचपन में शरीर को अच्छा आहार मिलेगा तभी इंसान युवावस्था में शक्तिशाली बन पायेगा। इसलिए शरीर को स्वस्थ रखना है तो बचपन से ध्यान देने की जरुरत है। आजकल के युवा अभिभावकों के लिए बड़ा संदेश है अपने बच्चों को ऐसा खाना दें जो उनको बल दे, सिर्फ स्वाद के लिए ही न खिलाए तभी वे बड़े होकर स्वयं को और समाज को सही दिशा में ले जा पाएंगे।

पुस्तकीय ज्ञान ही पर्याप्त नहीं - कृष्ण ने अपनी शिक्षा संदीपनी ऋषि के आश्रम में रह कर पूरी की थी । कहा जाता है 64 दिन में उन्होंने 64 कलाओं का ज्ञान हासिल कर लिया था। वैदिक ज्ञान के अलावा उन्होंने कलाएँ सीखीं। शिक्षा ऐसी ही होनी

चाहिए जो हमारे व्यक्तित्व का रचनात्मक विकास करे। संगीत, नृत्य, युद्ध सहित 64 कलाएँ कृष्ण के व्यक्तित्व का हिस्सा हैं। बच्चों में किताबी ज्ञान ही न भरें। उनकी रचनात्मकता को नया आयाम मिले, ऐसी शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिए।

रिश्तों के महत्व को समझें - कृष्ण ने जीवन भर कभी उनलोगों का साथ नहीं छोड़ा जिनको मन से अपना माना। अर्जुन से वे युवावस्था में मिले, ऐसा महाभारत का कहना है। लेकिन अर्जुन से उनका रिश्ता हमेशा मन का रहा। सुदामा हो या उद्धव, कृष्ण ने जिसे अपना मान लिया उसका साथ जीवन भर दिया। रिश्तों के लिए कृष्ण ने कई लड़ाइयाँ लड़ीं और रिश्तों से ही कई लड़ाइयाँ जीती। उनका सीधा संदेश है सांसारिक इंसान की सबसे बड़ी धरोहर रिश्ते ही हैं इसलिए अपने रिश्तों को दिल से जीये, दिमाग से नहीं।

नारी का सम्मान समाज के लिए आवश्यक - राक्षस नरकासुर का आतंक था। करीब 16,100 महिलाओं को उसने अपने महल में कैद किया था। महिलाओं से बलात्कार करता था। कृष्ण ने उसे भी मारा। सभी महिलाओं को मुक्त कराया। लेकिन सामाजिक कुरितियाँ तब भी थीं। उन महिलाओं को अपनाने वाला कोई नहीं था। खुद उनके घरवालों ने उन्हें दूषित मानकर त्याग दिया। ऐसे में कृष्ण आगे आए। सभी 16,100 महिलाओं को अपनी पत्नी का दर्जा दिया। समाज में उन्हें सम्मान के साथ रहने के लिए स्थान दिलाया। कृष्ण ने हमेशा नारी को शक्ति बताया, उसके सम्मान के लिए तत्पर रहे। पूरी महाभारत नारी के सम्मान के लिए ही लड़ी गई। सो आप कृष्ण भक्त हैं तो अपने आस-पास की महिलाओं का पूरा सम्मान करें। कृष्ण की कृपा पाने का यह सरलतम मार्ग है।

अपने मतभेद अगली पीढ़ी को न दें - कम ही लोग जानते हैं कि जिस दुर्योधन के खिलाफ कृष्ण ने आजीवन पांडवो का साथ दिया, उसकी मौत का कारण भी कृष्ण की कूटनीति बनी, वही दुर्योधन रिश्ते में कृष्ण का समधी भी था। कृष्ण के पुत्र सांब ने दुर्योधन की बेटी लक्ष्मणा का अपहरण करके उससे विवाह किया था क्योंकि लक्ष्मणा, सांब से विवाह करना चाहती थी लेकिन दुर्योधन खिलाफ था। सांब को कौरवों ने बंदी भी बनाया था। तब कृष्ण ने दुर्योधन को समझाया था कि हमारे मतभेद अपनी जगह है, लेकिन हमारे विचार हमारे बच्चों के भविष्य में बाधा नहीं बनने चाहिए। दो परिवारों के आपसी झगड़े में बच्चों के प्रेम की बलि न चढ़ाई जाए। कृष्ण ने लक्ष्मणा को पूरे सम्मान के साथ अपने यहाँ रखा। दुर्योधन से उनका मतभेद हमेशा रहा लेकिन उन्होंने उसका प्रभाव कभी लक्ष्मणा और सांब की गृहस्थी पर नहीं पड़ने दिया।

शांति का मार्ग ही विकास का रास्ता है - कृष्ण ने महाभारत युद्ध के पहले शांति से समझौता करने के लिए पांडवों और कौरवों के बीच मध्यस्थता की हांलाँकि दोनो ही पक्ष युद्ध लड़ने के लिए आतुर थे लेकिन कृष्ण ने हमेशा चाहा कि किसी तरह युद्ध टल जाए। झगड़ों से कभी समस्याओं का समाधान नहीं होता है। शांति के मार्ग पर चलकर ही हम समाज का रचनात्मक विकास कर सकते हैं। कृष्ण ने समाज की शांति से मन की शांति तक दुनिया को यह समझाया कि कोई भी परेशानी तब तक मिट नहीं सकती, जब तक वहाँ शांति न हो। फिर चाहे वो समाज हो, या हमारा खुद का मन। शांति से ही सुख मिल सकता है, साधनों से नहीं।

दूरदर्शी बनें - महाभारत में जुए की घटना के बाद पांडवों को वनवास हो गया। कृष्ण ने अर्जुन को समझाया कि यह समय भविष्य की तैयारी करने का है। महादेव शिव, देवराज इंद्र और दुर्गा की तपस्या करने को कहा। कृष्ण जानते थे कि दुर्योधन को कितना भी समझाया जाए, वो पांडवो को कभी उनका राज्य नही लौटाएगा। तब शक्ति और सामर्थ्य की जरुरत होगी, कर्ण के कुंडल कवच पांडवों की जीत में आड़े आएंगे, ये भी वे जानते थे। उन्होंने हर चीज पर बहुत दूरगामी सोच रखी। कोई भी फैसला तात्कालिक आवेश में नहीं लिय़ा । हर चीज के लिए आने वाली पीढियों की सोच। ऐसी ही सोच समाज का निर्माण करती है।

धैर्य सबसे बड़ा गुण- पांडवों के राजसूय यज्ञ में शिशुपाल कृष्ण को अपशब्द कहता रहा। शिशुपाल कृष्ण का छोटा भाई था लेकिन मर्यादाएँ तोड़ दीं।

पूरी सभा चकित थी, कुछ क्रोधित भी थे लेकिन कृष्ण शांत थे। मुस्कुरा रहे थे। शांति दूत बनकर गए तो दुर्योधन ने अपमान किया, कृष्ण शांत रहे। अगर हमारा दिमाग स्थिर है, मन शांत है तभी हम कोई सही निर्णय ले पाएंगे। आवेश में हमेशा हादसे होते हैं, ये कृष्ण सिखाते हैं। विपरीत परिस्थियों में भी कभी विचलित नहीं होने का गुण कृष्ण से बेहतर कोई नहीं जानता।

लीडर बनें, श्रेय लेने की होड़ से बचें

- कृष्ण ने दुनिया भर के राजाओं को जीता था। जहाँ ऐसे राजाओं का राज था, जो भ्रष्ट थे, जैसे जरासंध लेकिन कभी किसी राजा का सिंहासन नही छीना। कृष्ण के पूरे जीवन में कभी ऐसा नहीं हुआ कि उन्होंने किसी राजा को मारकर उसका शासन खुद लिया हो। जरासंध को मारकर उसके बेटे को राजा बनाया, जो चरित्र का अच्छा था। सभी जगह ऐसे लोगों को बैठाया, जो धर्म को जानते थे। कभी किंग नहीं बने। हमेशा किंगमेकर की भूमिका में रहे। महाभारत युद्ध में भी खुद हथियार नही उठाया। पूरा युद्ध कूटनीति से लड़ा, पांडवों को सलाह देते रहे लेकिन जीतने का श्रेय भीम और अर्जुन को दिया।

हर मनुष्य अपना स्वास्थ्य खुद ही लिखता है।

– गौतम बुद्ध

स्वच्छता, पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य

संदीप कुमार सरकार, स. लेखापरीक्षा अधिकारी

स्वच्छता एक अभ्यास है
जिसे अपनाना है जरूरी,
स्वस्थ रहने के लिए,
गंदगी से रखनी है दूरी।

वर्तमान समय ने दिखा दिया,
पर्यावरण है अति आवश्यक,
प्रकृति से न कर तू छेड़-छाड़,
वरना कष्ट मिलना मज़बूरी।

प्रलय और महामारी के हैं कारक,
मानव द्वारा फैलाये कंक्रीट राज,
जंगल-जंगल हैं काट दिये,
अब इस कमी को करनी है पूरी।

हर प्राणी प्रकृति पर है निर्भर,
प्रकृति ही भोजन देती है,
अगर बिगड़ जाय यह संतुलन,
जीवों की मृत्यु निश्चित है।

हर तरफ मची है हाहाकार,
कहीं भूकम्प तो कहीं दावानल,
बाढ़ के गर्भ में समाये कई गाँव,
बीमारियों ने कर दिये जीवन अचल।

मौसमों का संतुलन बिगड़ गया,
कभी बेहद गर्मी, तो कभी कसके ठंडक,
कभी वर्षा दिखलाये रौद्र रूप,
अपने आगोश में कर ले बंधक।

मानव स्वास्थ्य के रक्षा हेतु,
पल-पल में स्वच्छता आवश्यक है,
संग पर्यावरण की रक्षा हेतु,
पेड़ लगाना है जरूरी।

घर की सफाई के साथ-साथ,
आस-पास की सफाई भी रखनी है,
तभी बीमारियों को दूर भगा,
एक स्वस्थ समाज हमें गढ़नी है।

अच्छा स्वास्थ्य आतंरिक शक्ति, शांत मन और आत्मविश्वास लाता है,
जो कि बहुत महत्वपूर्ण है।
– दलाई लामा

क्या जरूरत उनकी

अविनाश कुमार, डी.ई.ओ.

सुंदर था जग सारा, हरा- भरा वन प्यारा।
आए हम यहाँ जीने मजे में और क्या !
हाथ- पैर थे हृष्ट- पुष्ट, न था मानव में कोई विकार।
हवा, पानी, खाना सब था परिष्कृत; क्या न था यहाँ।

प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति थी,
पर देखो न हम मानव में कितनी फुर्ती थी।
धीरे- धीरे हम मानव आगे बढ़े या यूं कहें कि हम हैं घटे।
क्या जरूरत थी उनकी जिन के लिए हम हैं मरे।
क्या हम लोहा खायेंगे या सोने का पानी पिएंगे!
न जाने कब तक हम अपने ही मौत का जाल बुनेंगे।

आराम के चक्कर में हम कितने नमक हराम हुए,
प्रकृति के सभी साधनों का दुरुपयोग हैं किये।
हमें तो केवल खाना था, पीना था और हवा लेकर जीना था।
इनसे अत्यधिक महत्व हमने अर्थहीन आकांक्षाओं को दिया,
बस और क्या हमने खुद का सत्यानाश है किया।

धुवों के बर्फ हैं गल रहे, बढ़ रहा जल स्तर
फिर भी नेताओं का तेज कहाँ होता है कम।
ऐसे अनपढ़ लोग हमारे नेता हैं,
जिन्हें इतनी बड़ी समस्या भी नजर न आती है।
कहते हैं शक्ति (न्यूक्लियर ऊर्जा) चाहिए, बहुत कार्य जो करना है,
पर ऐसी ऊर्जा किस काम की जिससे विश्व का खात्मा ही होना है।

हर तरफ प्रदूषण ही प्रदूषण, फिर भी कल कारखाने बन रहे
पेड़-पौधों की है जरूरत पर यही तो हैं घट रहे।
समझ नहीं आता हम कैसा विकास चाहते हैं,
क्या हम इस जीवनयुक्त धरती का अवकाश चाहते हैं?

जरूरत नहीं ऐसी सुविधाओं की;
जो इतनी बड़ी कीमत पर हमें मिले।
जरूरत है कि हम ऐसे बढ़ें, जिससे कि न हम विनाश के गाल में गिरें।

सिलेबस की पढ़ाई का ही यह दुष्परिणाम है;
वरना इतने किताबों में क्या कोई ज्ञान न है!
पर्यावरण विज्ञान आवश्यक विषय है बना दिया गया पर,
इसे भी मात्र नंबर पाने के लिए विद्यार्थियों ने पढ़ा।
ऐसी शिक्षा जहां ज्ञान से ज्यादा नंबर महत्व रखते हैं,
क्या जरूरत जो कक्षा में ही विद्यार्थियों को बांटते हैं।

धर्म के नाम पर लोग सारे बंट गए,
जाति- पाति ने सब के टुकड़े कर दिये।
फिर भी हम ऐसी व्यवस्था को बढ़ावा हैं दे रहे।
क्या जरूरत ज्ञान अर्जन की जहां आज भी हम पशु हैं बने हुए।

धरती एक है पर हमने बाँट दिया;
मात्र सुविधा के लिए होता तो था भला पर;
इससे तो असुविधाओं का पहाड़ ही खड़ा हुआ।
क्या जरूरत ऐसे बँटवारे की जिससे असुविधाएं बढ़ें।
क्या जरूरत ऐसे शासन की जिससे मात्र हम हैं लड़े।

अच्छे स्वास्थ्य की चमक का आनंद लेने के लिए,
आपको व्यायाम करना चाहिए।

संघर्ष और चुनौतियाँ

मनोरंजन कुमार, डी.ई.ओ.

एक बार एक किसान परमात्मा से बड़ा नाराज हो गया। कभी बाढ़ आ जाए, कभी सूखा पड़ जाए, कभी धूप बहुत तेज हो जाए, तो कभी ओले पड़ जाए। हर बार कुछ न कुछ कारण से उसकी फसल थोड़ी खराब हो जाए। एक दिन बड़ा तंग आकर उसने परमात्मा से कहा, देखिये प्रभु, आप परमात्मा है, लेकिन लगता है आपको खेती-बाड़ी की ज्यादा जानकारी नहीं हैं। प्रभु आपसे मेरी एक प्रार्थना है कि एक साल मुझे मौका दीजिये, जैसा मैं चाहूँ वैसा मौसम हो, फिर आप देखना मैं कैसे अन्न के भंडार भर दूंगा। परमात्मा मुस्कुराते हैं और कहते हैं ठीक है जैसा तुम कहोगे वैसा ही मौसम दूंगा, मैं दखल नहीं करूंगा।

किसान ने गेहूं की फसल बोई, जब धूप चाही तब धूप मिली, जब पानी तब पानी। तेज धूप, ओले, बाढ़, आँधी तो उसने आने नहीं दी। समय के साथ फसल बढ़ी और किसान की खुशी भी क्योंकि ऐसी फसल तो आज तक नहीं हुई थी। किसान ने मन ही मन सोचा अब पता चलेगा परमात्मा को कि फसल कैसे उगाई जाती है, बेकार ही इतने बरसों से हम किसानों को परेशान करते रहे हैं। फसल काटने का समय भी आया। किसान बड़े गर्व से फसल काटने गया, लेकिन जैसे ही फसल काटने लगा एकदम से छाती पर हाथ रखकर बैठ गया। गेहूं की एक भी बाली के अंदर गेहूं नहीं थी, सारी बालियाँ अंदर से खाली थीं। बड़ा दुखी होकर उसने परमात्मा से कहा, प्रभु ये क्या हुआ? तब परमात्मा बोले, ये तो होना ही था, तुमने पौधे को संघर्ष का जरा भी मौका नहीं दिया था। न तेज धूप में उनको तपने दिया, न आँधी ओले से जूझने दिया, उनको किसी प्रकार की चुनौती का एहसास जरा भी नहीं होने दिया, इसलिए सब पौधे खोखले रह गए, जब आँधी आती है, तेज बारिश होती है, ओले गिरते है तब पौधा अपने बल से ही खड़ा रहता है, वो अपना अस्तित्व बचाने का संघर्ष करता है और इस संघर्ष में जो बल पैदा होता है वही उसे शक्ति देता है, ऊर्जा देता है, उसकी जीवटता को उभारता है। सोने को भी कुन्दन बनने के लिए आग में तपने, हथौड़ी से पीटने, गलने जैसी चुनौतियों से गुजरना पड़ता है तभी उसकी स्वर्णिम आभा उभरती है, उसे अनमोल बनाती है। ठीक उसी तरह जिंदगी में भी अगर संघर्ष न हो, चुनौती न हो तो आदमी खोखला ही रह जाता है, उसके अंदर कोई गुण नहीं आ पाता। ये चुनौतियाँ ही है जो आदमी रूपी तलवार को धार देती है, उसे सशक्त और प्रखर बनाती है, अगर प्रतिभाशाली बनना है तो चुनौतियों को स्वीकार करना ही पड़ेगा, अन्यथा हम खोखले ही रह जाएंगे। अगर जिंदगी में प्रखर बनना है, प्रतिभाशाली बनना है, तो संघर्ष और चुनौतियों का सामना तो करना ही पड़ेगा।

बिना स्वास्थ्य जीवन, जीवन नहीं होता,
बल्कि यह दुखों और आलस्य की अवस्था होती है।
– अल्बर्ट आइंस्टीन

भारत को स्वच्छ बनाना है

स्वपन कुमार धर, व. लेखापरीक्षक

भारत को स्वच्छ बनाना है
भारत को ऊँचा उठाना है
आओ मिलकर करें संकल्प
एकजुट होकर भारतवर्ष को
मोती सा चमकाना है।
भारत को स्वच्छ बनाना है।
अपने आस-पास की गंदगी को
हम सब को मिलकर साफ रखना है
भारत को स्वच्छ बनाना है।
स्वच्छता ओर नियमों का सही पालन कर
कोरोनारूपी दानव को भगाना है
भारत को इस विषम परिस्थिति से बाहर निकालना है
भारत को ऊँचा उठाना है।
भारत को स्वच्छ बनाना है।

प्रतिज्ञा

स्वपन कुमार नस्कर,
व. लेखापरीक्षा अधिकारी

उस दिन तो पर्यावरण के
महत्व का था ना आभास।
जिस दिन पृथ्वी को बनाया
अपना प्यार आवास।
पेड़ काटकर घर बनाया
पानी में मिलाया विष।
वायु में भी धुआँ मिलाया
छोड़ी ना कोई कोशिश।
महत्वकांक्षा और लोभ के कारण
अपने आपको जो छला।
अब मुझे समझ में आया
हाय मैं क्या कर डाला।
वर्तमान में सुख के कारण
भविष्य को किया अनिश्चित।
अस्तित्व के संकट में
वहाँ मैं आज भयभीत।
प्रतिज्ञा मैंने लिया जब
हुआ मुझे अहसास।
पृथ्वी को फिर से बनाना
है सुरक्षित आवास।

हमारे अच्छे स्वास्थ्य से ज्यादा महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं – यह हमारी प्रमुख पूंजीगत संपत्ति है।

– अर्लेन स्पेक्ट

अस्वस्थ (एक व्यर्थ)

सुधा शर्मा, कनिष्ठ अनुवादक

जिंदगी चार दिन की है हर पल जी लो,
जब पल बीत जाए तो जिंदगी व्यर्थ है जान लो।
पल – पल की जिंदगी ही जब युग-युग में बदल जाए,
चार दिन का यह जीवन ही जब भारी हो जाए;
तो उसे अस्वस्थता कहते हैं,
जीते जी मात्र मौत की दुआ जो करे;
उसे ही तो अस्वस्थ कहते हैं।

हर सांस जिसकी दर्द देता है, वह उसी कष्टदायक सांस लेने को मजबूर;
जिसने जिंदगी के अत्यधिक पल अस्पताल में जिये,
उसे यह समाज 'एक व्यर्थ' कहने को है उत्सुक।

ईश्वर ने जिससे किया छल, लोग उसी पर दिखाते हैं बल।
एक तो दर्दनाक जिंदगी कितना झेलना है मुश्किल;
ऊपर से 'व्यर्थ हो'- 'व्यर्थ हो' यह सुनना कितना है कठिन।
इनका हर क्षण मौत के तरीके ढूँढने में बीतता है;
आत्महत्या के लिए कभी जहर, तो कभी नदी में कूदना सोचता है।

जिंदगी तो इनके लिए मात्र सजा है, पर
हाय! विडम्बना की इन्होंने बचपन में कुछ कविताओं को पढ़ा है,
जहाँ आत्महत्या को कायरता बतलाया गया है।
इन्होंने तो इन कविताओं को हृदय में उतारा था;
अब कैसे कायर बने?

ऐसे वीरों को व्यर्थ कहकर क्यों इनकी मुश्किल बढ़ाते हैं?
जो जीते जी कायर न बनने का पाठ पढ़ाते हैं।
आप और हम तो जीवन की दौड़ में खुद को आजमाते हैं,
पर इनसे तो दौड़ में हिस्सा लेने का अधिकार ही छिन लिया,
सोचो जरा ईश्वर ने इन पर कितना जुल्म है किया!

अस्वस्थता अभिशाप नहीं मात्र दुर्भाग्य है।
हम और आप भाग्यशाली हैं तो क्यों इनका मजाक बनाएँ।
जिनका जीवन निरंतर एक युद्ध है;
शब्दों के अचूक बाणों से घायल कर क्यों इनका हौसला तोड़ें।
कुछ करना ही है तो इनके लिए भाग्य बनायें,
डाक्टरी विज्ञान में अपने तरीके से योगदान दे कर इनका जीवन नर्क से स्वर्ग बनाएँ।

हम अत्यधिक मारक क्षमता वाले हथियारों पर खर्च करते हैं,
इंसानियत का खून बहाने वाले साधनों को बनाने में अपनी ऊर्जा नष्ट करते हैं।
प्रश्न है उन अजीबो- गरीब इंसान चर्म वाले वैज्ञानिकों से कि
इंसान के शरीर को धूल में उड़ाने वाले हथियारों के स्थान पर
जरा खर्च करेंगे अपनी बुद्धि इनके दर्द को मिटाने पर,
तो क्या बिगड़ जाएगा?
क्या मुसकाते मनुष्य का चेहरा आपको जरा भी सुकून न दिलाएगा?

खुद स्वस्थ हैं तो क्यों लाखों को अस्वस्थ बनाओगे;
पहले से ही कितने दर्द में है, क्यों औरों को दर्द में लाओगे?
अजी! बुद्धिमान हो तो अपनी बुद्धि का सदुपयोग तो करो,
मानव हो मानवता का पथ तो चुनो।

अब भी समझ न आए तो दर्दनाक जीवन जीने वाले वीरों से मिलो,
रोज 'व्यर्थ हो-व्यर्थ हो' जैसे कड़वे शब्दों का पात्र बनने के बावजूद भी;
ये तुम जैसे व्यर्थ से भी बदतरों से अच्छे हैं।

इनकी खुद की जिंदगी लोगों को सतर्क करती है।
'स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है' सबको फिर याद दिलाती है।
जो जीते जी एक सच का उदाहरण बन दिखलायें,
ऐसे लोगों को व्यर्थ कहने से हम क्यों न शर्माएँ।

स्वच्छता को अपने आचरण में इस तरह बसा लो कि वो आपकी एक आदत बन जाये। यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता है।

– महात्मा गाँधी

स्वच्छता एवं मानव स्वास्थ्य

धीरेन्द्र कुमार, व. लेखापरीक्षक

जैसा कि हम सब जानते हैं कि स्वच्छता हमारे जीवन के लिए कितना महत्वपूर्ण है। स्वच्छता से हम सब स्वस्थ रहते हैं और स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ बुद्धि का विकास होता है। फलत: स्वस्थ बुद्धि से ही हम स्वस्थ राष्ट्र और स्वस्थ देश की कल्पना कर सकते हैं। हमारा देश भारत ऋषि-मुनियों का देश कहा जाता है। प्राचीन काल से ही ऋषि-मुनि पूजा–पाठ, धर्म, कर्मकांड आदि पर ध्यान देते आये थे। इन सबको करने के लिए वे आस-पास के वातावरण एवं पर्यावरण को साफ-सुथरा रखते थे क्योंकि गंदगी के माहौल में पूजा-पाठ को अच्छा नहीं माना जाता है। परिणामस्वरुप स्वच्छता का प्रचलन शायद उसी समय से हुआ। स्वच्छता के संदर्भ में हम प्राचीन काल की तरफ देखते हैं तो पाते हैं कि वातावरण एवं पर्यावरण को साफ-सुथरा रखने में कीट-पक्षी, जीव-जन्तु सभी ने हम सबका साथ दिया है। कीट, पक्षी, जंगली जीव-जानवर हमारे आस-पास फैले वातावरण को साफ रखने में अहम भूमिका निभाते हैं। पहले के समय में हम सब यह भी देखते थे कि गंदगी के कारण बहुत सारे ग्राम एवं शहरी इलाके में महामारी फैल जाती थी, जिसके कारण लाखों की संख्या में जान-माल मर जाते थे। इसका कारण था कि गुलामी के समय में अँग्रेज भारतीय जन-जीवन पर ध्यान नहीं देते थे जिसके कारण हमारे समाज में अशिक्षा का माहौल बनते जा रहा था। अशिक्षा के कारण बहुत सारे लोग स्वच्छता के महत्व को नहीं समझ पाते थे, जिसके कारण गंदगी फैल जाती थी, फलस्वरूप अनेक प्रकार की बिमारियाँ फैल जाती थी और महामारी का रुप ले लेती थी। इस प्रकार लाखों-करोड़ों लोगों की जिन्दगी समाप्त हो जाती थी।

यद्यपि, हम सब जानते हैं कि भारत में स्वच्छता का परिचय प्राचीन काल से ही आते रहा है। प्राचीन काल में सिन्धु-घाटी सभ्यता का विकास सिन्धु नदी के किनारे हुआ। इस सभ्यता के परिणामस्वरुप बहुत सारे नगरों का विकास हुआ। इन नगरों में हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो दो प्रमुख नगर थे। उस समय के नगरीय व्यवस्था को देखकर लगता है कि भारत स्वच्छता के प्रति ध्यान प्राचीन काल से ही देते आ रहा है। मोहनजोदड़ो के निवासियों ने स्वच्छता संदर्भ में जिस जागृति का परिचय दिया कदाचित् ही किसी अन्य संस्कृति में ऐसी जागृति का उदाहरण प्राप्त हो। इस संस्कृति में शौचालय व उसके स्वच्छता संबंध के विचार क्रांतिकारी विचार रहे हैं। सुनिश्चित व पूर्ण विचार-विमर्श की फलश्रुति का अनुभव इस संस्कृति में होता है। घर में स्नानागार, शौचालय का विशेष ध्यान देखा गया है। स्वच्छता संदर्भित कई अवशेष इस संस्कृति के संशोधनों में पुरातत्व विभाग को प्राप्त हुए हैं। इस तरह से हम सब देखते हैं कि भारत में स्वच्छता के प्रति सजगता कितनी ज्यादा रही है। उस समय भी सिन्धु घाटी निवासी प्रकृति की पूजा किया करते थे। प्रकृति को भगवान समझते थे, उसकी पूजा-अर्चना करते थे। प्रकृति एवं पर्यावरण को साफ-सुथरा रखते थे।

उसके बाद, भारत की संपन्नता एवं धन-दौलत को देखकर आस-पास के देशों का ध्यान भारत पर पड़ा। पहले भारत की समृद्धि को देखकर इसे सोने की चिड़िया कहा जाता था, लेकिन कुछ समय बाद, अंग्रेजों ने भारत पर अपना अधिकार जमा लिया। जिसके कारण स्वच्छता एवं शिक्षा पर बुरा प्रभाव पड़ा। भारत की अधिकांश आबादी शिक्षा से वंचित रहने लगी थी। इस प्रकार, व्यक्तियों के बीच स्वच्छता की जागरुकता कम हो गयी। लोगों ने स्वच्छता पर ध्यान देना छोड़ दिया। जिसके कारण दस्त, पीलिया, हैजा, खसरा, आँखों का रोग आदि होने लगा। प्रति वर्ष इस प्रकार के संक्रमण से लाखों-करोड़ों व्यक्तियों की जान चली जाती थी। भारत ने अनेक महामारियों का सामना किया है। प्लेग, हैजा, चेचक और स्पैनिश फ्लू से लेकर कोविड-19 तक ये महामारियाँ हर कुछ दशक बाद आती रही हैं और इन्होंने एक बड़ी आबादी को खासा परेशान किया है। अगर इन महामारियों का इतिहास देखें और इनके प्रसार के रुट का अध्ययन करें तो स्पष्ट होता है कि इनमें से ज्यादातर महामारियाँ सैनिकों, उद्यमियों, व्यापरियों, प्रवासियों और पर्यटकों के माध्यम से विश्व में एक से दूसरे क्षेत्र में फैली। इंडियन प्लेग महामारी जो ब्रिटिश कालीन बंगाल में 1817

ई. के आसपास भयानक रुप से फैली थी, ब्रिटिश सेना की टुकड़ियों के माध्यम से बंगाल के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में पहुँची। फिर ब्रिटिश व्यापारियों और सैनिकों के जरिए वह इंग्लैंड पहुँची। इसे भारतीय प्लेग नाम दिया गया था। धीरे-धीरे वह इसकी संवाहक में तब्दील होती गई। 14वीं सदी का भयानक प्लेग, जिसे 'ब्लैक डेथ" का नाम दिया गया था, वह भी यूरोप में 1340 ई. में सुदूर पूर्व के देशों में पैदा होकर जहाजों और उन पर काम करने वाले लोगों व व्यापारी प्रवासियों के माध्यम से फैली थी। तीसरी महामारी, जिसकी शुरुआत 19वीं सदी के मध्य में चीन में हुई थी जो सभी बसे हुए महाद्वीपों में फैलने वाला प्लेग था और इससे केवल भारत में एक करोड़ लोगों की मौत हो गई थी। इस महामारी के दौरान 1900 ई. में संयुक्त राज्य अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को में प्लेग का पहला मामला सामने आया ।

एड्स लगभग 1969 के आरंभ में अफ्रीका से सीधे हैती और उसके बाद संयुक्त राज्य अमेरिका और दुनिया के अधिकांश भागों में फैल गया। संयुक्त राष्ट्र के आबादी शोधकर्ताओं के अनुमान के अनुसार 2025 तक एड्स से भारत में 31 मिलियन और चीन में 18 मिलियन लोगों की मौत हो सकती है। अभी वर्तमान में कोविड-19 महामारी एक वैश्विक महामारी हो गयी है। इसका उद्गम चीन को माना जाता है। जहाँ से यह विश्व के तमाम देशों जैसे-संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, फ्राँस, ब्रिटेन, रुस, जापान, भारत सहित विश्व के समस्त देशों में फैल चुका है। वर्तमान में सबसे ज्यादा केस संयुक्त राज्य अमेरिका में हैं जहाँ कुल लगभग 50 लाख के आस-पास लोग संक्रमित हैं, जिसमे 1.5 लाख के आस पास की मृत्यु हो चुकी है। वर्तमान में संक्रमण के आधार पर भारत का स्थान तीसरा है जो कि चिन्ताजनक स्थिति है। यहाँ लगभग 18 लाख संक्रमित हुए हैं और 37 हजार के आस पास मृत्यु हुई है। संक्रमण और मृत्यु में दूसरा स्थान ब्राजील का है, जहाँ 27.1 लाख संक्रमित हैं और 93 हजार के आस-पास मृत्यु हुई है। इस प्रकार हम देखते हैं कि विश्व के समस्त देशों में कोविड-19 का असर देखने को मिल रहा है। विश्व स्तर पर देखें तो कुल संक्रमण की संख्या 1.79 करोड़ है तथा मृत्यु की संख्या 6.85 लाख है। वर्तमान युग जो कि वैज्ञानिक और तकनीक का युग है। इसमें इतने वृहत् स्तर पर संक्रमण एक चिन्ता का विषय है। इस पर हम सबको एक जुट होकर चिन्तन करने की आवश्यकता है।

इस संक्रामक महामारी या बिमारी से निजात पाने के लिए हम सबको मिलकर स्वच्छता पर ध्यान देना होगा। हम सब यह भी जानते हैं कि महामारी जीवाणु या विषाणु, प्रोटोजोआ आदि के कारण फैलता है। जीवाणु और विषाणु गंदगी के कारण ही आस-पास के वातावरण में फैलता है। अगर पर्यावरण को हम सब मिलकर स्वच्छ रखें तो हम सब बिमारी से भी मुक्त रहेंगे।

सरकार एवं यहाँ के जनता द्वारा भी समय-समय पर स्वच्छता अभियान चलाया जाता रहा है। भारत का इतिहास गवाह है कि कई समाज सुधारकों के द्वारा स्वच्छता अभियान चलाया गया है। मुख्यत: महात्मा गाँधी, डॉ.बाबा साहेब अम्बेदकर, संत गाडगे, बाबा व सूर्यकान्त परीख उल्लेखनीय हैं। इन लोगों ने स्वच्छता व स्वास्थ्य सुधार, शौचालय के गंदेपन का निकास, शौचालय व स्नानगृह की सफाई आदि के लिए जनजागृति की मुहिम छेड़ी है। गाँधी जी ने स्वच्छता व अस्पृश्यता निवारण को स्वतंत्रता संग्राम प्रवृति का एक हिस्सा बनाया था। स्वच्छ परिधान, घर की स्वच्छता, स्वच्छ कार्यों के लिए डॉ. बाबा साहेब प्रेरक रहे हैं। सार्वजनिक रास्तों की सफाई, पे एण्ड यूज़ सुविधाएँ आदि के लिए सूर्यकान्त परीख कार्यशील थे। डॉ. बिन्देश्वरी पाठक ने निम्न जाति के लोगों द्वारा गंदगी उठाने के कार्य का विरोध किया है। शौचालय के नवीनीकरण को प्रेरणा दी है।

गाँधीजी ने सफाई कर्मियों व अस्पृश्यों को हरिजन शब्दों से विभक्त किया। गाँधी जी ने जीवन पर्यन्त प्रयास करते हुए इन लोगों को पीड़ा मुक्त करने का आन्दोलन चलाया तथापि उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त न हुई। अस्पृश्यता को गाँधीजी पाप मानते थे एवं हिन्दू धर्म को कलंक के रुप में मानते थे। हरिजनों से विवाह संबंध में भी गाँधी जी विधेयात्मक रहे हैं। हरिजन बच्चों को गोद लेते हुए समाजोद्धार का कार्य किया। सवर्णों को हरिजन कन्याओं से विवाह हेतु प्रोत्साहित किया गया। गाँधी जी ने कहा था कि स्वतंत्रता से स्वच्छता विशेष महत्वपूर्ण है। 1920 ई. में गाँधी जी ने स्वच्छता आन्दोलन प्रारंभ किया। उनका लक्ष्य गंदगी उठाने वाले की यातना मुक्ति सामग्री जैसे कि सुलभ शौचालय हेतु ईंट, पत्थर, पानी, लकड़ी आदि का उपयोग करता है। पर्यावरण स्वच्छता भी गाँधी जी के विचार थे।

डॉ. अम्बेदकर महर जाति के महान नेता थे। महर लोग मृतक पशुओं को उठाते थे, उस पर पाबंदी लगाई गई। कई किताबों के द्वारा उन्होंने अपने विचार प्रदर्शित किए। अस्पृश्यों के लिए गाँधी जी के कार्यों के विवरण का उल्लेख उन्होंने अपनी किताब में 1925 ई. में किया है। 1943 ई. में गाँधी जी ने अस्पृश्यता मुक्ति, 1946 ई. में अस्पृश्यों के उद्धव में

वर्तमान स्थिति का परिचय व्यक्त करने वाली किताब लिखी है। अम्बेदकर ने दबे हुए दलितों के लिए धार्मिक दृष्टिकोण व शुद्धि-अशुद्धि के ख्यालों में बदलने का प्रयास किया था। महर सत्यागृह, स्वमान, रक्षण, जाति प्रथा विरोधी मुहिम आदि अम्बेदकर के कार्य थे।

19 वीं सदी में महाराष्ट्र के गाँवों में ग्रामीण स्वच्छता की मुहिम छेड़ने वाले संत गाडगे बाबा का कार्य उल्लेखनीय रहा है। ग्रामीण समूहों में निम्न सामाजिक रिवाज, धार्मिक अंधश्रद्धा भेदभाव, महिलाओं से अन्याय, गरीबों का प-रावलम्बन, गंदगी आदि को लेकर संत गाडगे बाबा ने विरोध प्रदर्शित किया। कीर्तनों के माध्यम से अंधकार में रहनेवाली जनता को उम्मीद की नई किरण का अनुभव करवाया। भारत सरकार ने 2000-2001 में 'गाडगे बाबा स्वच्छता अभियान' स्वच्छता कार्यक्रम का गठन करते हुए ग्राम्य स्वच्छता का अभियान प्रारंभ किया।

डॉ. बिन्देश्वरी पाठक ने 1970 में स्वच्छता आन्दोलन को प्रभावोत्मक बनाने हेतु सुलभ स्वच्छता संस्था की स्थापना की। इसका मूल उद्देश्य सफाई कर्मी और अस्पृश्य लोगों को यातना मुक्त कराना था। सुलभ टेक्नोलॉजी के द्वारा पर्यावरणीय सुविधा व संरक्षण पैदा किया। बिहार के एक जिले (वैशाली) से प्रारंभ होने वाला यह आन्दोलन आज देश के विभिन्न भागों तथा अफगानिस्तान, भूटान जैसे देश में भी कार्यरत है। उन्होंने सफाई कर्मियों के बच्चों को अँग्रंजी माध्यम में शिक्षा हेतु 1992 ई. में सुलभ पब्लिक स्कूल की स्थापना की।

सुलभ इंटरनेश्नल से प्रेरित होकर 1988 ई. में न फायदे, न नुकसान की नीति से नासा फाउंडेशन के कर्मियों ने 'पे एण्ड यूज' के रुप में सामूहिक शौचालय का निर्माण किया। इसी वर्ष श्री सूर्यकान्त पारीख ने मित्रों की सहायता से 'नेशनल सेनिटेशन एण्ड एन्वायरमेंट इंप्रूवमेंट फाउंडेशन" (National Sanitation and Environment Improvement Foundation) की स्थापना की।

केन्द्र सरकार ने भी 1947 के बाद सफाई कर्मियों की स्थिति में सुधार हेतु कदम उठाए। स्वच्छता, सफाई कर्मियों की मुक्ति, सामाजिक-धार्मिक सुधार, मानवाधिकार आदि हेतु समितियों का गठन किया गया। राष्ट्रीय अनुसूचित आयोग, राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग आदि संगठन कार्यरत हैं। सन 1991-92 में सफाई कर्मियों व उनके आश्रित की मुक्ति की राष्ट्रीय योजना, बच्चों की मैट्रिक पूर्व की छात्रवृत्ति, मैट्रिक पश्चात छात्रवृत्ति, उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति, राजीव गांधी राष्ट्रीय छात्रवृत्ति हेतु केन्द्र द्वारा संचालित योजनाएँ तैयार की गई हैं। जून 2014 में संसद के संबोधन में राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने कहा था कि पूरे देश में स्वच्छता, अपशिष्ट प्रबंधन और सफाई सुनिश्चित करने के लिए स्वच्छ भारत मिशन शुरु किया जाएगा। वर्ष 2019 में मनाई जाने वाली 150वीं जयंती महात्मा गाँधी को हमारी श्रद्धांजलि होगी। स्वच्छ भारत अभियान की औपचारिक शुरुआत से पहले एक स्वच्छता अभियान 25 सितम्बर से 23 अक्टूबर तक सभी कार्यालयों और पंचायत स्तर तक चलाया गया था। स्वच्छ भारत अभियान का शुभारंभ 02 अक्टूबर 2014 को गाँधी जयंती पर किया गया। इसका उद्देश्य गलियों, सड़कों तथा अधोसंरचना को साफ-सुथरा करना और कूड़ा साफ रखना है। अधिकारिक रुप से 01 अप्रैल 1999 से शुरु भारत सरकार ने व्यापक ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम का पुनर्गठन किया और पूर्ण स्वच्छता अभियान शुरु किया जिसको बाद में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह द्वारा 'निर्मल भारत अभियान" नाम दिया गया। 24 सितम्बर 2014 को केन्द्रीय मंत्रिमंडल की मंजूरी से निर्मल भारत अभियान का पुनर्गठन किया गया था। इस योजना के अतिरिक्त एक और योजना 'नमामि गंगे परियोजना" जून 2014 में शुरु की गयी थी। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य गंगा नदी की साफ-सफाई करके प्रदूषण को कम करना है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सरकार ने भी समय-समय पर अनेक कार्यक्रम को शुरु करके स्वच्छता पर ध्यान दिया है, ताकि बिमारी या महामारी का खतरा कम या समाप्त हो सके।

इस कार्यक्रम के कार्यान्वयन के परिणामस्वरुप बिमारियों की तीव्रता में कमी आई है। पहले महामारी के कारण देखा जाता था कि लाखों-करोड़ों की संख्या में व्यक्तियों की मौत हो जाती थी, लेकिन अब इस कार्यक्रम के आने से तथा अस्पताल में बुनियादी सुविधाओं को बहाल करके मौतों को बहुत हद तक कम किया गया है। पहले के समय में टी. बी. जैसी बिमारी को जानलेवा बिमारी के रुप में देखा जाता था, लेकिन अब उचित सुविधाओं के आ जाने से टी.बी. का सफल इलाज होने लगा है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सरकारी कार्यक्रम या योजना के कार्यान्वयन से महामारी को बहुत हद तक नियंत्रित किया जा सका है।

एक बात अभी भी हम सबको देखने के लिये मिलती है कि कार्यक्रम के कार्यान्वयन से जितनी सफलता मिलनी चाहिए, उतनी नहीं मिल पाती है। आखिर क्यों? इस सवाल

का जवाब हम सबको आत्ममंथन करके देना होगा । इसके लिये सरकार के साथ-साथ बहुत हद तक हम सब भी जिम्मेदार हैं। सरकारी तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण भी योजना का सही तरह से कार्यान्वयन नहीं हो पाता है। सरकारी तंत्र के साथ-साथ हम सब भी अपनी नैतिकता का पतन कर चुके हैं। इस संदर्भ में एक छोटा-सा उदाहरण देना चाहेंगे। घर-घर शौचालय योजना के तहत प्रत्येक घर में शौचालय निर्माण का लक्ष्य सरकार द्वारा किया गया। लेकिन गाँव में ऐसे बहुत सारे केस देखने को मिले कि सरकारी बाबू के मिलीभगत से शौचालय का पैसा लाभार्थी को मिल गया, लेकिन शौचालय नहीं बन पाया। दूसरा केस और देखने को मिला था कि जिसके पास पहले से शौचालय निर्मित है, वह व्यक्ति भी सरकारी बाबू को घूस देकर अपने नाम पर शौचालय का पैसा ले लेता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सरकार जिस योजना या कार्य के लिये पैसा आवंटित करती है, उस का सही तरह से उपयोग नहीं हो पाता है। अत: हम सबकी भी यह नैतिक जिम्मेदारी होनी चाहिए कि योजना का कार्यान्वयन सही तरह से किया जा सके।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सरकारी योजना के आने से लोगों को बुनियादी सुविधा मिल रही है और बेहतर स्वास्थ्य लाभ मिल रहा है। इस प्रकार स्वच्छता आने से हम सब स्वस्थ जीवन जी रहे हैं। अत: स्वच्छता और हमारा स्वास्थ्य एक-दूसरे के पूरक हैं। स्वच्छता से ही स्वस्थ शरीर हो सकता है और स्वस्थ शरीर से ही स्वस्थ सोच मिल सकती है। हम सब यह अच्छी तरह से जानते हैं कि आज के बच्चे ही कल के भविष्य हैं। देश के उज्जवल भविष्य के लिए आज के बच्चों का स्वस्थ होना बहुत जरुरी है। बच्चों को स्वस्थ रखने के लिए आस-पास की स्वच्छता बहुत जरुरी है। स्वच्छ पर्यावरण में ही हम सब स्वस्थ रह सकते हैं। अत: हम सबका यह परम कर्तव्य होना चाहिए कि आस-पास के वातावरण को साफ-सुथरा रखें और देश के भविष्य निर्माण में अहम योगदान दें।

कोई भी व्यक्ति किसी विशेष क्षेत्र में एक विशेषज्ञ हो सकता है पर जब तक आंतरिक सफाई न हो तब तक हमारा मन बेकार धूलभरा होता है।

– श्री सत्य साईं बाबा

असंगत विकास एवं इसके दुष्परिणाम

सुनील कुमार, व.अनुवादक

मानव जीवन में स्वच्छता का महत्व अप्रतिम है। यह न केवल मनुष्य को सभ्य प्राणी की श्रेणी में खड़ा करने की दृष्टि से वरन मानव स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अत्यंत महत्व का विषय है। आवास से लेकर कार्यालय एवं पूरे परिवेश को साफ-सुथरा एवं स्वच्छ रखना हमारा कर्तव्य है। मानव जाति को अपने-आप को सर्वोत्कृष्ट जीव के रुप में प्रतिष्ठापित करने हेतु अपने व्यवहार और आचरण को भी इस प्रकार परिभाषित एवं परिवर्तित करना होगा जिससे यह प्रतीत हो कि हम प्रकृति की उत्तम रचना हैं। इस कारणवश हमारी जिम्मेदारियाँ भी बढ़ जाती हैं।

प्रकृति ने हमारी आवश्यकताओं का ख्याल रखते हुए हर उस चीज की व्यवस्था नैसर्गिक रुप से कर रखी है जिससे हमें जीवन-यापन में सहूलियत हो। जीवन-धारण हेतु वायु, जल और भोजन की आवश्यकताओं के साथ-ही हमारी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भी प्रकृति की ओर से पर्याप्त व्यवस्था की गई है। ऐसे में हमारा कर्तव्य है कि इस धरा के सर्वोत्तम प्राणी के रुप में हम प्रकृति की अनमोल धरोहरों को संजो कर रखें क्योंकि यह हमारे अस्तित्व के लिए अपरिहार्य है। यद्यपि हम मनुष्य के रुप में अपने-आप को प्राणियों की विशिष्ट श्रेणी में रखते हैं तथापि प्रकृति का सर्वाधिक नुकसान हमने ही किया है।

औद्योगिक क्रांति के आगाज ने मनुष्य को विकासवाद की होड़ में लाकर खड़ा कर दिया। इसने प्राकृतिक संसाधनों यथा पेट्रोलियम पदार्थ, कोयला एवं अनेक खनिज पदार्थों के अंधाधुन दोहन की परंपरा को जन्म दिया जिसके फलस्वरुप बड़े पैमाने पर जंगलों को काटना पड़ा जो कि मनुष्य के साथ-ही अन्य जीवों के लिए भी घातक सिद्ध हुआ। तीव्र गति से बढ़ती आबादी एवं मनुष्य की भोजन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी वनों को काटकर कृषि योग्य भूमि का सृजन किया गया।

वनों की कटाई, औद्योगिक कल-कारखानों और गाड़ियों द्वारा उत्पन्न होने वाली कार्बनिक पदार्थों एवं अन्य जहरीली गैसों के उत्सर्जन ने वायु प्रदूषण के साथ-साथ जल स्रोतों को भी प्रदूषित किया है। इनके फलस्वरूप पृथ्वी का औसत तापमान लगातार बढ़ रहा है जिससे अंटार्कटिका एवं अन्य ध्रुवीय क्षेत्रों के बड़े-बड़े हिमखंड पिघल कर टूट रहे हैं। साथ-ही उन क्षेत्रों के जैव परिस्थितिकी तंत्र पर भी बुरा असर पड़ रहा है। हिमालय के हिमाच्छादित क्षेत्र का भी क्षरण हो रहा है जिससे नदियों के जल- प्रवाह में निरंतरता की कमी देखी जा रही है। ये सभी मौसम और जलवायु परिवर्तन तथा अनावृष्टि और अतिवृष्टि के भी कारक हैं जो कि फसल चक्र और उत्पादकता को प्रभावित कर रहे हैं। इससे न केवल अन्य जीवों के साथ जीने की सहअस्तित्व की भावना प्रभावित हुई है अपितु हमारे अस्तित्व पर भी प्रश्नचिन्ह खड़ा होता प्रतीत हो रहा है।

जैव-विविधता हमारी धरती के लिए प्रकृति की एक अनुपम भेंट है। इससे धरती को विशिष्टता तो मिलती ही है, साथ- ही इसके निवासियों की मूलभूत जीवनोपयोगी आवश्यकताओं की पूर्ति भी होती है। लेकिन मनुष्य की विवेकहीन विकासवादी प्रवृत्ति ने जैव-विविधता को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। परिणामत: कई प्रकार के वनस्पति, वन्य प्राणी एवं जलीय जीव विलुप्त हो चुके हैं और कई अन्य विलुप्ति की कगार पर हैं जिसके लिए केवल मनुष्य को जिम्मेवार ठहराया जा सकता है।

मानव मात्र ने प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का इस कदर अविचारित रुप से दोहन किया है कि इसने हमारे सामने कई समस्याएँ खड़ी कर दी हैं। हमारे जीवन के लिए दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व वायु और जल हैं। शुद्ध वायु और स्वच्छ जल हमारी मूलभूत आवश्यकताएँ हैं लेकिन मनुष्य की अनियंत्रित व असंगत विकासवादी प्रवृत्ति ने इन दोनों तत्वों को अत्यधिक प्रदूषित कर दिया है। परिणामत: मनुष्य वायुजनित और जलजनित कई प्रकार की बिमारियों का शिकार हो रहा है जिससे हमारी सीमित स्वास्थ्य संसाधनों पर अनावश्यक दबाव पड़ रहा है।

आधुनिकता, लिप्सा एवं आर्थिक प्रतिद्वंदिता के अंधे दौड़ में हम अपने अस्तित्व पर ही कुठाराघात कर रहे हैं जिसका मूल्य वर्तमान पीढ़ी तो चुका ही रही है, भावी पीढ़ियों के भविष्य के लिए भी संकेत अच्छे नहीं हैं। अत: अपनी जिम्मेवारियों को दृष्टिगत करते हुए सहअस्तित्व की भावना के साथ प्रकृति का संरक्षण हमारा मूल मंत्र होना चाहिए। इसके लिए नीर क्षीर विवेक के साथ प्राकृतिक संसाधनों का दोहन एवं धरा को स्वच्छ रखना पहली शर्त है।

गत वर्ष हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता की पुरस्कृत रचनाएं

मानव के प्रकृति विजय की चाह-विकास क्रम की एक आवश्यक बुराई

धीरेन्द्र कुमार, व.लेखापरीक्षक

मानव प्रकृति का एक अभिन्न अंग है। प्रकृति में जिस प्रकार से जीव-जन्तु, पेड़-पौधे एक अंग होते हैं और वे जिस प्रकार अपने अस्तित्व के लिए प्रकृति पर निर्भर है ठीक उसी प्रकार मानव भी अपना वजूद बचाने और खुद को आगे बढ़ाने के लिए प्रकृति पर निर्भर हैं। मानव एवं जीव-जन्तु जिसे जिन्दा रहने के लिए ऑक्सीजन एवं जल की अति आवश्यकता होती है, जो कि प्रकृति से ही मिलता है। मानव प्रकृति के साथ उसी समय से जुड़ा हुआ है, जब से उसका अस्तित्व हुआ है अर्थात आदि मानव भी प्रकृति के साथ जुड़ा हुआ है। तभी से मानव धीरे-धीरे क्रमिक विकास की ओर बढ़ रहा है। विकास का यह क्रम अभी थमा नहीं है, और शायद आने वाले समय में यह क्रम थमने वाला भी नहीं है। विकास का यह क्रम तीन सिद्धांत पर कार्य कर रहा है। ये सिद्धांत हैं- नियतिवाद, संभववाद और समन्वयवाद।

विद्वानों द्वारा बताया गया है कि ये तीनों सिद्धांत एक दूसरे के बाद आए हैं। प्लूटो जैसे महान दार्शनिक ने भी इस सिद्धांत को सही बताया है। इसी सब सिद्धांत से गुजरते हुए मानव अपना विकास निरंतर क्रम से कर रहे हैं। मानव अपने विकास का यह क्रम प्रकृति पर ही निर्भर होकर कर रहा है। हम कह सकते हैं कि मानव अपना विकास प्रकृति से लेकर ही कर रहा है। इस विकास के दौर ने मानव को जाने और अनजाने में नुकसान भी पहुँचाया है। कभी-कभी यह नुकसान अपरिहार्य हो जाता है। अर्थात् विकास करने के लिए यह नुकसान जरुरी है। आइए विस्तार से चर्चा करते हैं कि मानव अपने विकास के क्रम में किस प्रकार से प्रकृति को जीतने की चाह रखता है और इस विकास से प्रकृति को क्या-क्या नुकसान हुआ है। क्या इस नुकसान को रोका जा सकता है या फिर उसे कम किया जा सकता है – इसकी चर्चा नीचे विस्तार से की जा रही है।

जैसे कि ऊपर बताया गया है कि मानव अपना अस्तित्व प्रकृति पर निर्भर रह कर ही बचा सकता है। पाषाण युग में मानव नग्न अवस्था में रहता था। प्रकृति में उपलब्ध कंद-मूल, या फिर जीव-जन्तु का शिकार करके अपना भरण-पोषण करता था । इस दौरान नियतिवाद का सिद्धांत था, अर्थात् प्रकृति में जो कुछ भी हो सकता है, वो उसकी नियति है। मानव उसमें कुछ नहीं कर सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो प्रकृति को पहले मानव द्वारा भगवान समझा जाता था। मानव प्रकृति की पूजा-अर्चना करते थे। खैर पूजा-अर्चना का वो दौर थोड़ा-थोड़ा आज भी प्रचलित है। जैसे- तुलसी के पेड़ एवं पीपल के पेड़ की पूजा करते हैं। इन पेड़ों की पूजा वैज्ञानिक ढंग से भी हमारे लिए बहुत जरुरी है। जब प्रकृति की मानव भगवान समझता था तो मानव डर से भी प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ नहीं करता था या ये कहें कि मानव के पास जितनी जरुरत थी उसी हिसाब से उस समय प्राकृतिक पदार्थ, खनिज-लवण, वनस्पति, पेड़-पौधों, जीव-जन्तुओं का उपयोग करता था। जैसे-जैसे मानव में बुद्धि, कौशल और ज्ञान का विकास हुआ वे घुमंतु जिन्दगी को छोड़ कर एक जगह स्थाई रुप से रहकर खेती और पशु पालन करने लगा। खेती करने के लिए मानव ने जंगलों को काटकर मैदान बनाया। घर बनाने के लिए भी जमीन की आवश्यकता हुई, तो पेड़े-पौधों को काटकर जंगल साफ कर दिया गया। आदि समय में जब जंगलों की कटाई होती थी तो उसका प्रभाव प्रकृति के ऊपर बहुत कम पड़ता था क्योंकि वृहत-पैमाने पर जंगल की कटाई नहीं होती थी लेकिन विकास क्रम का दौर आगे बढ़ते रहा।

विकास-क्रम के दौरान जब मानव और ज्यादा विकसित हुए तब उसकी अपनी आवश्यकता और बढ़ गई। जैसे-जैसे समय बीतता गया विकास का दौर आगे बढ़ता रहा। इसी दौरान नगरीकरण का दौर चला। नगरीकरण के अलावा, मानव के भौतिकवादी आवश्यकता बढ़ती गई। इसके लिए भी मानव को इसी प्रकृति पर आश्रित होना पड़ा था और तब मानव प्रकृति

का दोहन करने लगा। इस समय संभववाद के सिद्धांत का विकास हुआ। इसे हम ये भी कह सकते हैं कि इस दौर में मानव खुद की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए संभव था। इसीलिए इस सिद्धांत को फैब्बारे जैसे महान विद्वान ने कहा कि इस युग में मनुष्य के लिए कुछ भी प्राप्त करना संभव था। नगरीकरण एवं भौतिकवाद के कारण मानव जंगल की सफाई करके नये-नये नगर बसाने लगे। अपनी सुख-सुविधा के लिए परिवहन की भी व्यवस्था की गई। अच्छे-अच्छे मकान में रहने के शौक के कारण भी मानव को प्रकृति पर आश्रित रहना पड़ा। पेड़-पौधे काटकर फर्नीचर बनाए गए तथा तरह-तरह के भौतिकवादी सामान बनाए गए।

जब मानव का विकास थोड़ा और ज्यादा हुआ तो औद्योगिक क्रांति का युग आ गया। इस क्रांति के आने से मानव और प्रकृति के बीच का जो संबंध था वो थोड़ा सा परिवर्तित हो गया। ये क्रांति विश्वव्यापी क्रांति थी। इसमें सभी देश, दूसरे देश से आगे बढ़ने के दौर में प्रकृति का दोहन करने लगे। बड़े पैमाने पर जंगल काटा गया। नये-नये कल कारखाने स्थापित किए गए। तरह-तरह के उपग्रह छोड़े गये। मानव अपनी भौतिकतावाद को और बढ़ाना चाहने लगा। इस चाहत से प्रकृति को बहुत ज्यादा ही नुकसान हुआ लेकिन मानव के पास और कोई विकल्प नहीं था शिवा प्रकृति का उपयोग करने के। फलस्वरुप मानव और प्रकृति के बीच जो संतुलन था वो बिगड़ने लगा। हमारे पर्यावरण एवं उपस्थित जीव-जन्तुओं एवं पेड़-पौधों को नुकसान हुआ। विकास के लिए इतना नुकसान जरुरी था। जगह-जगह नये तकनीक के सहारे नए-नए भवन एवं पुल-निर्माण होने लगे। उदाहरण के लिए अभी थोड़े समय पहले ही कलकत्ता मेट्रो के द्वारा हुगली नदी के नीचे सुरंग बना लिया गया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रकृति का अति-दोहन होने लगा। संभववाद के दौर में प्रकृति को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है। जिसका परिणाम भी हमारे सामने ही है। जैसे- हिमालयी प्रदेश मे बहुत सारे जैव-विविधता लुप्त होते जा रहें है। जंगली गदहा, गिद्ध का विनाश होने लगा। वायु प्रदूषण, जल-प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, भूमंडलीय ताप में वृद्धि, बाढ़ एवं सूखा तथा चक्रवात आदि प्राकृतिक आपदाएँ आने लगी, जिसका गहरा प्रभाव हमारे ऊपर पड़ने लगा। अभी हाल फिलहाल में ही बिहार, केरल, महाराष्ट्र एवं अनेक राज्यों मे वर्षों बाद बाढ़ का प्रकोप हुआ। वहीं महाराष्ट्र एवं अन्य प्रदेशों को भी सुखाड़ का सामना करना पड़ा। कुछ दिन पहले फनी चक्रवात आया जिससे कि भारत के पूर्वी तटवर्ती राज्य आंध्र प्रदेश, उड़ीसा एवं पश्चिम बंगाल में भारी जान माल की क्षति हुई। इस प्रकार हम देखते हैं कि औद्योगिक क्रांति के बाद प्रकृति का बहुत ज्यादा ही दोहन हुआ और इसका असर हमारे पर्यावरण पर पड़ा। यहाँ आगे बढ़ने के लिए एवं विभिन्न देशों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए प्रकृति का दोहन जरुरी था। जब दोहन जरुरी था, तो उसका विनाशकारी प्रभाव भी जरुरी था। इस प्रकार हम देखते हैं कि मानव विकास के दौर में आगे तो बढ़ गया लेकिन इस विकास के दौर ने प्रकृति को बहुत नुकसान पहुँचा दिया, जो कि जरुरी है।

लेकिन आज भी मानव सूझ-बूझ से काम ले और बढ़े तो प्रकृति को बचाया जा सकता है। यहाँ एक और सिद्धांत को लाना जरुरी हो गया है, वो है समन्वयवाद। समन्वयवाद, नियतिवाद एवं संभववाद का मिश्रण है। इस सिद्धांत के द्वारा मानव अपने विकास के साथ-साथ प्रकृति की सेवा भी करता है। जब प्रकृति की देखभाल करते हुए आगे बढेगें, उसी दिन मानव के प्रकृति विजय की चाह पूरी होगी। तभी सही मायने में मानव प्रकृति को जीत पायेगा और इस दौरान होने वाले आवश्यक नुकसान को कम किया जा सकेगा।

उपरोक्त बात को सार्थक करने के लिए किसी एक देश या समुदाय के मानव को आगे आने से नहीं होगा वरन समस्त संसार के देशों को आगे आना होगा। जैसे- परमाणु अप्रसार को सभी देशों को सुनिश्चित करना होना। ऊर्जा के लिए कोयला एवं प्राकृतिक गैस के विकल्पों को खोजना होगा। उपरोक्त बात को ध्यान में रखके हम प्रकृति-दोहन से नुकसान को कम कर सकते हैं।

अत: हम सब मानव के विकास-क्रम के दौरान होने वाले आवश्यक बुराई को समन्वयवाद का सिद्धांत अपनाकर कम कर सकते हैं। लेकिन प्रकृति विजय की चाह एक आवश्यक बुराई है। **(हिंदी भाषी)**

गत वर्ष हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता की पुरस्कृत रचनाएं

कश्मीर-समस्या एवं 370 के अलावा वैकल्पिक समाधान

रिंकू घोष, व. लेखापरीक्षक

कश्मीर का भूगोल ऐसा है कि वह स्वतंत्र देश के रुप में अपना अस्तित्व संभाले नहीं रख पाया। 1947 में जब कश्मीर भारत के साथ जुड़ा था तब प्रधानमंत्री नेहरु जी ने 370 धारा का उपाय ठीक समझा, जबकि भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ० श्यामप्रसाद मुखर्जी ने इसका विरोध किया और इसके लिए उन्हें अपना जान देना पड़ा। डॉ. अम्बेडकर ने भी धारा 370 का विरोध किया पर मामूली चर्चा के बाद 17 अक्टूबर 1949 में यह 370 धारा भारतीय संविधान में जोड़ दिया गया, धारा 370 कश्मीर समस्या का इलाज तो नहीं कर पाया बल्कि 70 सालों से आज तक यह विकराल रुप धारण कर लिया

पाकिस्तान कश्मीर मामले में हमारे साथ इसलिए लड़ते हैं कि हम अपनी उर्जा ज्यादा से ज्यादा इसमें व्यय करें। डोडा, पुलवामा, कारगिल इन सब मामलों में वह भारत का ही नुकसान पहुँचाए जा रहे हैं।

कश्मीर के पास दो नीति है- (1) नेहरु की पेन किलर नीति जो 70 सालों से चलती जा रही है और (2) डॉ० मुखर्जी की नीति – रोग को समझ कर सही ईलाज करने का नीति, दो-विधान दो निशान को छोड़कर कश्मीर से निजात पाने की नीति। कश्मीर की रक्षा तो हमारी सेना कर सकती है, उसके लिए जान भी दे सकती है पर वहाँ बस नहीं सकती।

कश्मीर समस्या में हमें चीन से सीख लेनी चाहिए। चीन में सिंजियांग प्रान्त में उईगर मुसलमानों में अलगाववाद की आग वढ़ने लगी। चीन ने इस समस्या को प्रारम्भिक स्तर पर चिन्हित किया और इसके लिए कठोर कदम लिये। चीन ने सबसे पहले उईगर मुसलमानों के बसने वाले जगह में उस देश का सबसे बड़ा समुदाय हान को बसाया, इससे सिंजियांग प्रान्त की डेमोग्राफी में भारी बदलाव आया, और उईगर मुसलमानों का आत्मविश्वास टूट कर रह गया। जैसे सिनजियांग प्रान्त में अलगावाद कम हो गया काफी हद तक कश्मीर मामले में भी कुछ ऐसे ही करना चाहिए।

कश्मीर में जब तक भारत विरोधी लोग रहेंगे तब तक इसका इस्तेमाल शत्रु देश करते रहेगें, मेरे विचार में कश्मीर समस्या का समाधान करने के लिए निम्नलिखित कदम लिए जा सकते हैं।

(1) प्रथम चरण में भारतीय सैनिक और अर्द्धसैनिक बलों के परिवारजनों को कश्मीर में काम करने का सुविधा प्राप्त करना चाहिए। कश्मीर मामले में शहीद होने वाले सैनिकों के परिजनों को कश्मीर मे बसने की अनुमति देनी चाहिए।

(2) दूसरे चरण में कश्मीर में भारत के सभी प्रान्त के लोगों को काम करने का और बसने की अनुमति देनी चाहिए – जिससे कश्मीर की डेमोग्राफी में अगले दो दशकों में काफी बदलाव आएगी।

(3) कश्मीर में बदहवी मुसलमानों को रोकने के लिए उन सब मस्जिदों और मदरसों मे रोक लगाना चाहिए जहाँ से अलगावाद का प्रचार किया जाता है। ऐसे हम देश के अंदर भारत-विरोधी मुसलमानों को कम कर सकते है।

(4) भारत की सुरक्षा बल को और मजबूत करना चाहिए, कश्मीर बॉर्डर मे चारों तरफ कैमरे की निगरानी रखनी चाहिए जिससे दुश्मनों का हमला कम हो सके।

अंत में – कश्मीर मामले में देश के नेतृत्व करने वाले लोगों को कठोर होना पड़ेगा। जब तक कश्मीर की डेमोग्राफी को बदला नहीं जाएगा तब तक कश्मीर मामले का समाधान नहीं हो पाएगा। कश्मीर भारत का अंश हो कर भी अलग है। देश के साथ मिलके रहेंगे तो कोई शत्रु इसका फायदा नहीं उठा सकता। एकता ही शक्ति है। **(हिंदीतर भाषी)**

हिंदी दिवस समारोह -2019

इस कार्यालय में दिनांक- 02 सितंबर 2019 से 16 सितंबर 2019 के दौरान हिन्दी पखवाड़ा व हिन्दी दिवस समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह के शुभ अवसर पर कार्यालयीन काम-काज में हिन्दी भाषा के प्रयोग में सहायतार्थ एवं हिन्दी के प्रयोग में झिझक दूर करने के लिए अनेक प्रतियोगिताओं पर आधारित कार्यक्रम आयोजित किए गए। हिन्दी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ यथा निबंध-लेखन, टिप्पण व प्रारूप लेखन,श्रुतलेख, प्रश्नोत्तरी, वाद-विवाद एवं अंताक्षरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ सक्रिय रूप से भाग लिया।

मुख्य हिन्दी दिवस दिनांक-16.09.2019 को मनाया गया। यह दिन हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह का था। इस सुअवसर पर प्रधान महालेखाकार के कर कमलों द्वारा इस कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'नूतन क्षितिज" के एकादश अंक का विमोचन किया गया। इस समारोह में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा संगीत प्रस्तुत किया गया। प्रधान महालेखाकार ने प्रतियोगिताओं में अच्छे स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों एवं 'नूतन क्षितिज" पत्रिका में योगदान देने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किया।

प्रधान महालेखाकार महोदया के कर कमलों से मंगलदीप प्रज्ज्वलन एवं नूतन क्षितिज पत्रिका के एकादश अंक का विमोचन

1.	स्वागत भाषण	श्री प्रकाश कुमार कपूर, व. उप-महालेखाकार/प्रशासन
2.	गृह मंत्री का संदेश पाठ	श्री सुनील कुमार, व. अनुवादक/हिंदी कक्ष
3.	समूह गान	श्री संजीव दास, व.लेखापरीक्षा अधिकारी/रा.क्षे.ले.प., श्री पलाश सरकार, व.लेखापरीक्षक/आ.क्षे.ले.प.-I, श्री सुदीप्त चौधरी, व.लेखापरीक्षक/आ.क्षे.ले.प.-I एवं सुश्री निशा कुमारी, क. अनुवादक/हिंदी कक्ष
4.	गीत	श्री संतोष कुमार ठाकुर, स.लेखापरीक्षा अधिकारी/रा.क्षे.ले.प.
5.	संगीत	श्रीमती रिंकू घोष, व.लेखापरीक्षक/रा.क्षे.ले.प.
6.	संगीत	श्री पलाश सरकार, व.लेखापरीक्षक/आ.क्षे.ले.प.-I
7.	कविता पाठ	श्रीमती सुधा शर्मा, क. अनुवादक/हिंदी कक्ष
8.	संगीत एवं तबला वादन	श्री संजीव दास, व.लेखापरीक्षा अधिकारी/रा.क्षे.ले.प. एवं श्री विद्युत रॉय, व. लेखापरीक्षक/रा.क्षे.ले.प.
9.	संगीत	श्री सुदीप्त चौधरी, व.लेखापरीक्षक/आ.क्षे.ले.प.-I
10.	संगीत	श्री स्वपन धर, व. लेखापरीक्षक/प्रशासन- I
11.	पुरस्कार वितरण	प्रधान महालेखाकार महोदया द्वारा
12.	धन्यवाद ज्ञापन	श्री स्वपन कुमार नस्कर, व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष
		जलपान
		संचालक – अन्नपूर्णा वर्मा

हिन्दी पखवाड़ा 2019 के दौरान आयोजित कार्यक्रम

अंताक्षरी प्रतियोगिता का आनंद लेते हुये

वाद-विवाद प्रतियोगिता

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

अंताक्षरी प्रतियोगिता

श्रुत लेखन प्रतियोगिता

हिन्दी दिवस समापन समारोह- 2019

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
पश्चिम बंगाल
REDMI K20 PRO
AI TRIPLE CAMERA

पश्चिम बंगाल
REDMI K20 PRO
AI TRIPLE CAMERA

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
REDMI K20 PRO

सन्दीप कुमार सरकार
स. लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) पश्चिम बंगाल,
तृतीय एम. एस.ओ. भवन, सी. जी. ओ. परिसर, पंचम तल
डी. एफ. ब्लॉक, सॉल्ट लेक, कोलकाता- 700 064